पंचम अध्याय :

शिवानी के कथा साहित्य में प्रतिबिंबित समाज

यह सिद्ध है कि किसी भी रचना के अंतर्गत युगीनपृष्ठभूमि की निर्भरता स्थित है । वातावरण तथा देशकाल का महत्व प्रतिपादित करते हुए बाबू गुलाबराय ने कहा है कि "यदि पात्र भगवान की भांति देशकाल के बन्धनों से परे हो तो वे भी हम लोगों के लिये अभेद्य रहस्य बन जाएँगे । इसलिये देशकाल का वर्णन भी आवश्यक होता है ।..... जिस प्रकार बिना अंगूठी के नगीना शोभा नहीं देता उसी प्रकार बिना देशकाल के पात्रों का व्यक्तित्व भी स्पष्ट नहीं होता है और घटनाक्रम के समझने के लिये भी इसकी आवश्यकता है ।" [1]

आज का व्यक्ति अपने पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक जैसे क्षेत्र में तीव्रगत्या, परिवर्तित एवं विघटित परिस्थितियों और व्यवस्थाओं के बीच एक नूतन मानसिकता को अनुभूत कर रहा है । आदमी जिस प्रकार के समाज में रहता है वैसा ही वह काम भी करने लग जाता है । देशकाल, वातावरण का बाहरी रूप है । साहित्य जीवन का प्रतिबिंब होता है, अत: जीवन को समझने के लिये साहित्य का विधान ऐसा होना चाहिए कि उसके पात्रों और दृश्यों का समतल चित्र ही नहीं सम्पूर्ण रूप और चेष्टाएँ हमारे मन में जम जाय । वातावरण के सुक्ष्म निरीक्षण में दृश्य को साकार करने की शक्ति रहती है । वातावरण के अनुरूप ही पात्र का सृजन होता है । इसके अलावा

1 - "काव्य के रूप" बाबू गुलाबराय पृ. 175

सजीवता नहीं आती है तथा यथार्थता का आभास नहीं होता है ।" पात्र यथार्थ तभी होंगे जब वे परिस्थितियों के अनुकूल एवं जीते-जागते रहें, वातावरण यथार्थ तब होगा जब वह पात्र को पूर्णतया प्रकट करने में सफल हो और शैली यथार्थ तब होगी जब वह वातावरण के अनुसार जीनेवाले पात्र की दशा के अनुरूप हो ।"[1]

निष्कर्ष रूप में कहा जाय कि सजीव यथार्थ पात्र और वातावरण ही साहित्य का सृजन है । वातावरण की तत्कालिन सामाजिक आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का प्रतिबिंब साहित्य पर अवश्य प्रतिबिंबित होता ही है ।

शिवानीजी ने अपने समग्रतया साहित्य में अपने परिवेशीय जन-जीवन को बड़ी ईमानदारी और अनुभूतियों की सच्चाई के साथ अभिव्यक्त किया है । एतद विषयक सामाजिक व धार्मिक दोषों एवम् नवीन दृष्टिकोणों की ओर भी उनकी चेतना सदैव जाग्रत रही है । कुमाऊ एवम् शहरी जीवन की संवेदनाएँ तथा अनेक समस्याएँ उनके साहित्य फलक पर प्रतिबिंबित है । अभिशाप्त समाज से लेकर राजनैतिक परिवेशों के सफेद ठगों व दंभी धार्मिक लोगों तथा बनावटी साधुओं की असलियत आदि को भी चित्रित किया है ।

अत: यहाँ उनके कथा साहित्य में प्रतिबिंबित परिवेशीय जनजीवन की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक आदि स्थितियों के साथ देखने परखने का यथेष्ट प्रयत्न किया गया है ।

1 - हिन्दी उपन्यास सा॰ का अध्ययन - डा॰ गणेशन पृ॰ 405

(क) सामाजिक परिवेश व पारिवारिक जीवन :

युगों से भारतीय संस्कृति में पारिवारिक जीवन की विशिष्ट भावना प्रदर्शित होती चली आई है । पारिवारिक जीवन की मीठास, किसी भी आडम्बर रहित प्रेम भावना तथा हर्षोल्लास का साम्राज्य एवम् अनुशासन आदि भारतीय परिवारों में जितना देखने मिलता है इतना अन्य परिवारों में नहीं । "मरण सागर पारे" में यही प्रतिबिंबित है । अपनी ननद अपना सब कुछ लूँटाकर परिवार के अन्य लोगों को एक वट वृक्ष की तरह सहारा देती है और भाग्यवती जननी बन चुकी है । न जाने कितने अनाथ भानजे-भतीजियाँ, आत्मीय-अनात्मीयों के कल कंठ से पूरा घर गूंज उठता । उस वट वृक्ष की शीतल उदार छाया में अनेक नन्हें अनाथ पथिक आ-आकर सुस्ताने लगे थे ।" मुँह अँधेरे मिट्टी लिये चौके में कोयले की लक्ष्मण रेखा खींच, एक वस्त्रा बनी वह अपने उस विचित्र अटाले का संचालन स्वयं कर स्कूली भीड़ को जिमाती । बड़ी-सी कड़ाहियां, उनमें भी बड़े पतीले और दीर्घ कलछुल । साक्षात् अन्नपूर्णा के धैर्य से ही एक पंगत को जिमा दूसरी को बैठने का आदेश देती ।......... संध्या होते ही जब कभी वे अपने बहुरंगी जीवन के अतीत का बहीखाता खोल कर बैठती तो पूरा घर जुट जाता ।" 1

इस प्रकार पारिवारिक एकता, प्रेम बलिदान की भावना "मौसि" कहानी में भी देखने मिलती है । अपनी बहन का श्राप मिटाने अपनी संतान का त्याग करके एक उच्च पारिवारिक आदर्श व बलिदान की भावना तिला के पात्र के द्वारा प्रस्तुत हुई है । तारा को

1 - रथ्या - शिवानी - पृ. 114

मातृत्व की कांक्षना थी किंतु शाप के कारण एक भी संतान जीवित नहीं रहती थी । " एक दिन योगानुयोग दोनों की प्रसुति: एक साथ ही हुई और किसी को बिना पता चले तत्काल अपनी संतान को बदल लेती है । इस प्रकार परिवार के लिये अप्रतिम बलिदान दे देती है ।" [1]

इस प्रकार एक ओर पारिवारिक एकता, प्रेम बलिदान आदि की भावना का प्रतिबिंब है तो दूसरी ओर बदलते जीवन मूल्यों, पाश्चात्य शिक्षण का असर एवम् आर्थिक समस्या तथा पारिवारिक तनावों के कारण परिवारों का विभाजन भी दृष्टि-गत होता है । आर्थिक जिम्मेदारी के कारण व्यवसाय के लिये अपने परिवार से दूर होना पड़ता है तथा उस नये परिवेश से कई नये परिवर्तन स्वभाव व व्यवहार में आ जाते हैं और पारिवारिक कलह- घर्षण आदि से परिवार की एकता टूटकर विभाजित हो जाता है । पाश्चात्य परिवेश, रुग्ण परिवारजन की समस्या, सौतेली माँ, कुशंकाओं के कारण पारिवारिक कलह, पारिवारिक तनाव आदि प्रयोजनों से भी परिवार विभाजन होते हैं । इन सब का प्रतिबिम्ब शिवानी के साहित्य में विद्यमान है । "पूतोंवाली" उपन्यास में अपने पाँचों बेटों को उच्च शिक्षा प्रदान करवाई । उच्च ओहदे प्राप्त कर एवं परदेश जाकर अपनी पसंद की बीबियों के कारण रुग्ण वृद्ध माता की उपेक्षा करने, लगे जिसका जीवंत चित्रण "पूतोंवाली" में प्रस्तुत है । सभी बेटे अपने माता पिता को विस्मृत कर देते हैं, अंत में पूतोंवाली होते हुए भी निपूती बनकर माँ चल बसती है । इस प्रकार एक सुखमय परिवार टूट जाता है ।

1 - कैंजा - शिवानी (मौसी) पृ. 159

उद्दण्ड, स्वछंद स्वभाव वाली तथा हमेशा सीगारेट, अफीम और नशे की गोलियों की आदी ननद से त्रस्त होकर तथा हमेशा गाँजे और शराब के नशे में धुत रहने वाले पति के कारण "अतिथि" भी एक ऐसा ही उपन्यास है जिसमें एक सुखी परिवार के टूटने की आवाज आती है । "वातायन" के द्वारा भी लेखिका यही निर्दिष्ट किया है कि अब धीरे धीरे भारतीय परिवार व संस्कृति को हम भूल रहे हैं । वे कहती हैं -"आज जहाँ हमने अपने सभ्य जीवन को अनेक नवीन उपलब्धियों से समृद्ध किया है वहीं अपनी संस्कृति की अनेक पुरातन उपलब्धियाँ गँवा भी दी है ।"[1] जहाँ पहले बैठक खण्ड में दिवारों पर परिवार के सदस्यों माता-पिता आदि की तस्वीरें हुआ करती थी आज इसे दिवारों से हटाकर बिभत्स एवम् फिल्म तारिकाओं की अशोभनीय तस्वीरें दृश्यमान होती है ।

इसके अतिरिक्त "सुरंगमा" "मेंडा, "कस्तुरी मृग" "चौदह-फेरे" आदि उपन्यासों में भी पर स्त्री संबंध या सौत के कारण तथा कोठे पर ही जीवन भर मंडराते रहने के कारण से परिवार विघटन का संकेत मिलता है ।

नारी वर्ग - विविध परिपार्श्व : इस परिप्रेक्ष्य में नारी के विविध रूप दृष्टिगत होते हैं । भारतीय नारी युगों से एक पतिव्रता एवं आदर्श नारी के रूप में प्रतिबिंबित हुई है, हालाँकि नारी को समझने के लिये कितने ही विद्वान असमर्थ रहे हैं । "पूतोंवाली" उपन्यास के अंतर्गत भी एक पतिव्रता आदर्श भारतीय नारी का चित्रण किया गया है। पति उम्र में बड़ा हो या वृद्ध हो या किसी भी प्रकार का हो पागल हो या व्यसनी हो फिर

1 - "वातायन" - पृ. 3।

भी वह अपने पति के प्रति हमेशा वफादार रही है । विवाह के पश्चात् पागल पति की लगन प्रेम एवम् धैर्य से सेवा करती हुई पति व्रता पत्नी तथा पागल पति के द्वारा पीटी जाती जख्मी पत्नी की पतिव्रता भावना भी "गवाक्ष" के अंतर्गत उद्धृत की गई है ।"[1] पार्वती जिसके पाँच पाँच बेटे ऊँचे ओहदे पर थे जिनके ब्याह हुवे वहाँ तक भी न उसके पति ने उसके साथ बातचीत की थी न प्रेम से देखा है ।फिर भी पति को परमेश्वर मान कर निरंतर सेवा करती रहती है । इसी प्रकार "चौदह-फेरे" में नंदी का पात्र है । जो अनपढ़ होते हुए अपने पति के प्रति वफादार रहती है । गाँव में उसे छोड़कर अपनी प्राइवेट सेक्रेटरी के साथ शहर में पत्नी सा ही व्यवहार करते हुए पति को भी वह कभी दोषित नहीं कहती है और सब कुछ सहन करके अंत में साध्वी हो जाती है । उस युग में माता-पिता पुत्री को जहाँ चाहे ब्याह देते थे । इसकी पुष्टि "रतिविलाप" की अनसूया के पागल पति के द्वारा भी होती है ।"भैरवी" में भी राजेश्वरी का ऐसा ही चरित्र है ।"बूढ़े पति की वह सच्चे अर्थ में सहधर्मिणी बन-चुकी थी। वह पग-पग पर उसके पतिव्रत्य की परीक्षा लेता पर कभी मुँह की नहीं खाती । कभी खांसते-खाँसते वह थाली में थूक देता और फिर जूठी थाली पत्नी की ओर खिसकाकर कहता, इसी में खा लेना........ और वह बची खुची जूठन का चरी भूसा निरीह गैया की भाँति निगल जाती ।"[2] फिर भी पति के लिए भारतीय नारी की अप्रतिम आस्था है । "सुरंगमा" की राजलक्ष्मी जो सहती है यह उसके शब्दों में प्रस्तुत है ।" देखिए, उसने मेरी क्या

1 - गवाक्ष - शिवानी पृ. 13
2 - "भैरवी" - शिवानी पृ. 51

अवस्था की है । अब तक लाज-संकोच सेसिकुड़ी - सिमटी लक्ष्मी जैसे किसी दयालु न्यायाधीश की अदालत में खड़ी धर्षिता, पीड़िता नालिश कर रही मुखरा लक्ष्मी बन गई थी । उसने वैरोनिका का दिया ढीला ब्लाउज बिना किसी संकोच के चिबुक तक उठा लिया और ईषद् नम्र सुचिक्कन स्तन युगल पर भयानक दंत - नख - क्षतों के नीले उभरे चकते वैरोनिका को सहमा गये । लक्ष्मी हृदयहीन पति की पाशविकता का पुष्ट प्रमाण देकर मेज़ पर ही सिर रखकर सिसकने लगी ।" [1]

"भीलनी", "मौसी" आदि कहानियों में नारी का दूसरा रूप प्रकट होता है । उनके परिवार प्रति ममता और बलिदान तथा समर्पण की भावना स्पष्ट होती है । "करिए छिमा" के अंतर्गत भी हीरावती के पात्र द्वारा अनपढ़ होते हुए भी पति-प्रेमी की इज्जत आबरू की रक्षा के लिये पुत्र हत्या कर त्याग की भावना अवतरित की गई है । मंत्री प्रेमी के पूछने पर वह कहती है - "जनमते ही उसने आँख खोली । हीरावती ने मैली ओढ़नी से आँख पोंछी । मैंने पहचान लिया । अदालत में मैं पहली बार झूठी बनी । तुम्हारी ही कंजी आँखें थीं । वही नाक । वैसे ही टेढ़े होंठ कर मुस्कराया भी था दुसमनिया । सोचा कि मैं तो बदनाम हूँ ही, तुम्हे कीचड़ में क्यों घसीटूं ? सारा गांव तुम्हें पूजता था । बड़ा होता तो सब पहचान लेते कि किसका बेटा है ।" [2]

1 - "सुरंगमा" - शिवानी - पृ॰ 51

2 - "करिए छिमा" - शिवानी - पृ॰ 36

इस प्रकार पति को सर्वस्व मानने वाली नारी समय के साथ बदलती गई । इसका संकेत व उदाहरण भी शिवानी ने अपनी कतिपय कहानियों में प्रतिबिंबित किया है । "स्त्री कहने का अर्थ ही है उसको लज्जित स्वभाव का आभास कराना ।... किंतु बदलती मान्यताओं के साथ, नारी का वह रूप जो परम-वन्दनीय रहा, धीरे धीरे बदल गया, सुकृति के साथ विकृति का समावेश हुआ । नारी की वही बदलती अवस्था क्रमश: समकालीन साहित्य में प्रतिबिंबित होती गई । वैदिक साहित्य में जो देवी थी, वह शनै: शनै: मानवी बन गई ।"[1] अपने पैरों पर खड़े रहने के लिये या स्वाभिमान के कारण स्त्री व्यवसाय क्षेत्र के अंतर्गत भी प्रवेश कर चुकी है । घर की चहार दिवारों में ही बन्द रहना उसे अब वांछित नहीं है । "गवाक्ष" के अंतर्गत ही अंकित है कि - "आज वह प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष से कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है, भले ही उस खड़े होने में उसे हाथ में छोटा पेग थामना पड़े या बंदूक ।"[2]

पाश्चात्य शिक्षण के कारण नारी का नया रूप ज्ञात होता है । अब वह भी आई॰सी॰एस॰, डाक्टरी आदि पास करके कलक्टर, डाक्टरनी आदि बन सकती है । इसे "अतिथि", कैंजा", स्मशान चम्पा" आदि कहानियों के पात्रों द्वारा निर्दिष्ट किया है । "अपराधिनी", स्वयंसिद्धा", "अपराजिता" आदि कहानियों में पतिहंता, त्यक्ता एवम् स्वाभिमानी नारी पात्रों का उल्लेख मिलता है ।

1 - "वातायन" - शिवानी - पृ॰ 105

2 - "गवाक्ष" - शिवानी - पृ॰ 22

पाश्चात्य रंगों में रंगकर शराब अफीम. गांजा, सीगारेट पीना आदि भी "अतिथि" "कृष्णकली" और अन्य कहानियों के पात्रों के द्वारा प्रस्तुत है । स्त्री के चरित्र को जानना मुश्किल है । "सती", "तोप" आदि के नारी पात्रों की छल कपट या ठग विद्या को भी निरुपित की है । तोप जैसी 50 वर्षीय नारी अपने मोहपाश में कई आश्रितों को फंसा कर ब्याहती रहती है ।

इस प्रकार नारी के विविध रूपों के बारे में शिवानी ने "गवाक्ष" के अतिरिक्त "वातायन" के अंतर्गत भी अपने विचार प्रदर्शित किये हैं । नारी अपने पति को परम देवता मानती है। पति के बिना जीवन अपूर्ण है इसी उद्देश्य से भारतीय जन जीवन में सती प्रथा थी, जिसका प्रतिबिंब हमें शिवानीजी के "चौदह फेरे" उपन्यास में मिलता है । कुमाऊ के प्रसिद्ध जज साहब भंयकर दौरे में फंसे थे । जब इस बात का पता उनकी पत्नी को हुआ और उसे यकीन हुआ कि अब वे बच नहीं पायेंगे तो पीछे वाले दरवाजे से अपने कमरे में जाकर ब्याह के समय पहनी हुई नयी चुनरी और गहनों से सज कर आत्म हत्या कर ली ।" 1

शिवानी ने नारी के पावनशील सम्बन्धी पतिव्रत भावनाओं को भी प्रदर्शित किया है । इस दृष्टि से "अतिथि" की जया, "करिए छिमा" की हीरावती "भैरवी" की चन्दन आदि ऐसे ही पात्र हैं । जिन्होंने सील की रक्षा के लिये कितना कुछ सहा है ।

1 - "चौदह फेरे" - शिवानी - पृ. 25

वैवाहिक संदर्भ की अभिव्यक्ति:- भारतीय संस्कृति के अंतर्गत विवाह को परिवार एकता एवम् संवृद्धि के लिए आवश्यक माना गया है । हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने इसे पवित्र और सर्वोच्च धार्मिक बंधन माना है इसी कारण से पत्नी को धर्मपत्नी का नाम दिया जाता है । प्राचीनकाल में इस आशय से ही लोगों में अनेक मत मतान्तर होते रहे और बाल विवाह जैसे कुरिवाजों का भी प्रादुर्भाव हुआ । जैसे कि "भैरवी" की माया दीदी बाल विधवा वल्लभी अखाड़े की वैष्णवी थी जो नाथ जोगी के साथ सधवा होकर चल पड़ी ।[1]

इस प्रकार से कई जगह पर नाबालिग नायिकाओं का संकेत भी मिलता है जैसे कि "सुरंगमा" की राजलक्ष्मी कम उम्र में ही अपने संगीत मास्टर से ब्याहती है । ऐसे तो हमारे पुराणों में विवाह को मानव का एक अनिवार्य कर्तव्य माना है । न एकाकी पुरुष पूर्ण है न एकाकिनी नारी । "आज विवाह के वक्ष्यमाण केवल आठ विभिन्न वर्गों तक ही सीमित नहीं है । ब्राहम, दैव, अर्षि, प्राजापत्य, असुर, गांधर्व, राक्षस तथा पैशाच की अष्ट विधियों का अब कोई महत्व नहीं रहा । समाज का न अब वह अनुशासन ही रहा न वह भय । जब-जब उसके किसी सदस्य ने स्वेच्छा से विवाह कर उसकी मर्यादा का उल्लंघन किया तब-तब समाज की क्रुद्ध भृकुटि उठी अवश्य है किन्तु फिर उसी तेजी से गिर भी गई है...... किसी को अब उसकी चिन्ता नहीं है"[2]

आज पाश्चात्य शिक्षा, सभ्यता एवम् भौतिक व्यवस्थाओं का असर हमारी संस्कृति तथा गृहस्थ-जीवन पर अवश्य पड़ा है ।

1 - "भैरवी" - शिवानी - पृ. 115

2 - "वातायन" -शिवानी- पृ. 22

फलत: वैवाहिक पवित्रता, पतिव्रता, मान-मार्यादा आदि जैसे आदर्श आज के परिवारों में शेष रहे हैं । दाम्पत्य-जीवन में ह्रासशील तत्वों के कारण तनाव, अलगाव, एकाकीपन, तलाक, मानसीक संघर्ष आदि जैसी अनेक समस्याएँ उपस्थित हुई हैं । इसके अतिरिक्त नये युग की वैवाहिक रीति-रसमें भी अस्तित्व में आई हुई हैं । आज के युग में स्वतंत्र विचारक मानवी स्वतंत्र विहार के लिए तैयार है । भारतीय समाज अब संकुचित तथा किल्लेबंद जाति-पाँति या धर्मों के बन्धनों में रहना नहीं चाहता है । इसी कारण से उसकी पुष्टि शिवानीजी ने अपने कई उपन्यासों में आंतर्जातीय विवाह के द्वारा प्रदर्शित की है । माता-पिता या परिवार के बुजुर्गों के द्वारा दी गई अनुमति से आंतर्जातीय विवाह का ज्ञात होता है ।

"महोब्बत" उपन्यास में डॉ॰ मनोहर बर्वे भारतीय बंगाली है जिनकी पुत्री बिन्दु प्राचीन कला की शौकीन है । प्राचीन कारीगरी की बेनमून और कीमती तथा अप्राप्य चीजें उनके पास उपलब्ध हैं । प्रोफेसर बोबी विदेशी तथा उसी शौक में रुचि लेने वाले व्यक्ति हैं । दोनों की एक ही रुचि देखकर डॉ॰ मनोहर बर्वे ने ही उनकी दोस्ती बढ़ाने को प्रेरित किया । "कृष्णवेणी" के अंतर्गत भी यही बात अभिव्यक्त हुई है । वह भी उनके माता-पिता की इकलौती बेटी थी, किंतु भास्करन से उसका ब्याह करने तैयार हो जाते हैं । इस प्रकार आंतरजातिय विवाह के अंतर्गत मुस्लिम, इसाई, हबसी, पंजाबी, बंगाली आदि कई विवाहों के उदाहरण इनके उपन्यासों में हैं ।

"अतिथि" के अंतर्गत जया की ताई की भातृवधू कायस्थ थी । उनके एक पुत्र ने पंजाबिन से ब्याह किया था और पुत्री ने पहले एक मंदिर में प्रेम लग्न किया और बाद में एक हब्सी से शादी की थी । ताई जया से ही कहती है - "आग लगे इस कोख को, जो ऐसी कुलबोरनी हरफा को जन्म दिया, कहती है डाइवोर्स ले लिया है, अब किसी हब्शी से शादी कर रही है ।" [1] "मौसी" कहानी के अंतर्गत भी तिला ने एक सरदार जी से शादी की है । इसके अतिरिक्त श्मसान चम्पा की जुही ब्राहमन होकर मुस्लीम युवक तन्वीर से ब्याहती है । उसकी सहेली लक्ष्मी भी मुसलमान से आंतरजातीय ब्याह रचती है । भगवती से जूही कहती है - "नये दामाद के लिये टीका भेजा होगा, ममी ! पर जब नाम सुनेंगी । जानती हो क्या नाम है ? नाम है मसूद अली । वाह-वाह अब की ईद में समधियाने की सेवई खाएँगे हमारे पुरोहित जी।"[2] इस प्रकार आंतर-जातीय विवाह का दृष्टिकोण विवर्त्त मे भी दृष्टिगत होता है। तथागत हम कह सकते हैं कि नारी अब स्वयं को सम्पूर्ण स्वतंत्र बनाना चाहती है और भारतीय समाज में नवीन दृष्टिकोण सुचित कर रही है । "अतिथि" के अंतर्गत छंदा मालती से कहती है - "यह युग पति के चरणों की दासी बनने का नहीं है मालती, पति को चरणों का दास बनाने का है ।" 3

x "चौदहफेरे" के अंतर्गत भी धन्शेपंत की पुत्री ने मुसलमान युवक से तथा श्री राम भट्ट के पुत्र ने मुसलमानि न से आंतरजातयी ब्याह किये । 4

1 - "अतिथि" - शिवानी - पृ. 92
2 - श्मशान चम्पा - शिवानी - पृ. 11
3 - अतिथि - शिवानी - पृ. 135
4 - चौदह फेरे 5 शिवानी - पृ. 62

आंतर्जातीय विवाह के साथ-साथ लेखिका ने विवाह-पूर्व प्रेम - संबंध से भी अवगत कराया है । उनकी कई कथाओं में विवाह-पूर्व नायक-नायिका के प्रेम-संबंध प्रस्तुत है । जैसे कि- "श्मशान चम्पा" के अंतर्गत चम्पा, जूही, लक्ष्मीपंत, "सुरंगमा" के अंतर्गत राजलक्ष्मी तथा सुरंगमा, "कृष्णकली" में कृष्णकली, चौदहफेरे" में अहल्या, "मायापुरी" के अंतर्गत शोभा और मंजरी "कैंजा" में नंदी, "विवर्त्त" में ललिता, "रथ्या" में वसंती तथा कृष्णवेणी आदि नारी पात्र इस प्रकार के हैं ।

इनमें से किसी को अपने पवित्र प्रेम-संबंध को फलदायी करने में सफलता मिली है तो किसी को प्रेम में झुलसना पड़ा है तड़पना पड़ा है और परिणाम भुगतना पड़ा है, क्योंकि जातीय या कुलीन मान-मर्यादा तथा आर्थिक या सामाजिक विसंगतियाँ उनके प्रेम संबंधों को वैवाहिक रूप में परिणित होने में बाधारूप बनती है । भारतीय प्रेम-पद्धति सदा समाजोन्मुख रही है । अतः विवाह से प्रेम को अधिक महत्त्व दिया गया है । प्रेम वासना नहीं है इसका प्रमाण हमें कई उपन्यासों से मिलता है । विवाह वासना का ही स्वरूप है चाहे वह पवित्र संबंध क्यों न गिना जाय । प्रेम वासना का स्वरूप तब प्राप्त करता है जब विवाह में परि-णत होता है यह "सुरंगमा" की राजलक्ष्मी पर संगीत मास्टर के पाशविक शारीरिक यातनाओं से अवगत होता है । प्रेम भावुकता वादी होने से क्वचित उसके दुष्परिणाम भी आते हैं जो "विवर्त्त" "अतिथि", "महोब्बत" आदि के अंतर्गत दृष्टिगत होते हैं । कृष्णकली," "करिए छिमा", "रथ्या" आदि कहानियों में प्रेम सम्बन्ध को सर्वोपरि एवम् पवित्र तथा यथार्थता की चरमसीमा पर चित्रित किया है ।

वैवाहिक प्रथाएँ एवम् नवीन दृष्टिकोण :-

भारतीय परिवार में विविध प्रान्त व जाति-पाति के विविध प्रकार के रिवाज तथा वैवाहिक प्रथाएँ प्रचलित हैं । यद्यपि शिक्षित वर्गों के परिवेशों में रूढ़-प्रथाएँ तथा मान्यताएँ बदल चुकी है, फिर भी अन्य परिवेशों में अब भी प्राचीन रूढ़िगत वैवाहिक प्रथाओं का चलन मौजूद है । शिवानी ने अपने उपन्यासों में रिवाजों को भी प्रतिबिंबित किये हैं । विवाह के समय वर पक्ष की ओर से कन्या को याकन्यापक्ष की ओर से वर को कुछ न कुछ गहना या रुपये दिये जाते हैं । शिवानी के कई उपन्यासों में इसका उल्लेख मिलता है जैसे कि "चौदह फेरे" में कर्नल सर्वेश्वर को हीरे की कीमती अंगूठी देते हैं । उसी प्रकार से "अतिथि" में मंत्री माधवबाबू भी अपनी पुत्रवधू को नीलम और पुखराज से जड़ित कीमती चन्द्रहार देते हैं । शिवानीजी ने अपने "चौदहफेरे" उपन्यास में कहा है कि - "पहाड़ में केवल सवा रुपया जामाता को थमाकर कुश और हल्दी के बूते पर ही कन्यादान किया जाता था ।" [1]

"श्मशान चम्पा" के अंतर्गत भी इसका संकेत मिलता है । "वसन्त पंचमी के दिन तीन-चार बड़े - बड़े थालों में मेवा-मिष्ठान, साड़ी - अंगूठी लेकर चम्पा के चचेरे ममेरे देवर आकर टीका भी कर गए थे ।"[2] सुरंगमा के अंतर्गत रोबर्ट फिरंगी है फिर भी लक्ष्मी के ब्याह पर फादर के आदेश से अंगूठी पहनाता है ।"[3]

1 - "चौदह फेरे" - शिवानी - पृ. 7

2 - "श्मशान चम्पा"-शिवानी- पृ.31

3 - "सुरंगमा - शिवानी - पृ. 55

कई परिवेशों में कन्या को प्रश्न पूछ कर पसंदगी भी की जाती है । "वातायन" में ही ऐसे नायिका से पूछे गये प्रश्न अवतरित किये गये हैं । "पूछने लगे, नाचना जानती हो ? गाना जानती हो ? नाचकर दिखाओ, रविन्द्र संगीतक सुनाओ - कौन कौन सी पुस्तकें पढ़ी हैं ? मैं चुपचाप उनके अटिठे की प्रश्नों का उत्तर देती रही, फिर लड़के का बाप बोला, अच्छा बताओ तो मां, यदि तुम्हारे घर में किसी को चेचक निकल आए तो क्या करोगी ? कैसे सेवा करोगी उस रोगी की ?...... मैं तमक गई, बोली.......तुम्हे बहू चाहिए या नर्स ? [1]

भारतीय समाज में प्रेम, वात्सल्य तथा सहानुभूति जैसे अनेक विशिष्ट गुण रहे हैं । समाज के सम्बन्धियों एवम् रिश्तेदारों के साथ समूह मिलन या समारंभ के वक्त निखालस परिहास और आनंद-विनोद होता रहता है । शादी-विवाहों के अवसरों पर भी कन्या या वर के साथ कन्या की सहेलियों तथा बहनों के द्वारा हास्य विनोद या बहनोई के द्वारा परिहास चलता रहता है । इसका निरूपण भी "भैरवी" चौदहफेरे", "अतिथि" आदि उपन्यासों में देखा जाता है । "भैरवी" के अंतर्गत भाभी अपने देवर से परिहास करती है । "हाय देवरजी ! तुम तो कहीं से दूध-पीती बच्ची को ही उठा लाये, चाहने पर शारदा एक्ट में तुम्हें पकड़वाया जा सकता है । क्यों जी देवरानी, दूध के दांत टूट गये हैं तुम्हारे ? [2]

श्मशान चम्पा के अंतर्गत भी टीका लगाते वक्त रुक्की भाभी चंपा से कहती है-" अरी नाक पर रोली गिरी है ! बड़ा अच्छा सगुन हुआ, तेरा दुल्हा तुझे खूब प्यार करेगा ।"[3]

1 - "वातायन - शिवानी - पृ. 24
2 - "भैरवी " - शिवानी - पृ. 102
3 - श्मशान चम्पा- शिवानी-पृ.31

"अतिथि" में भी लीना नन्द के द्वारा परिहास किया गया है ।" - पृ० - 123

हिन्दू समाज में इतनी चुरतता भी कभी कभी देखने मिलती है । विवाह के पूर्व वर और कन्या की कुंडली का मिलान किया जाता है । यदि दोनों की जन्म कुंडली में मिलान न हो पाये तो कितना भी अच्छा रिश्ता क्यों न हों किंतु ब्याह नहीं हो सकता है । "अतिथि", कैंजा, "चौदहफेरे" आदि उपन्यासों में यह चित्रित है ।

विवाह कार्य बड़े आनंद -उत्साह एवम् शुभ-कामनाओं के साथ सम्पन्न किया जाता है । विवाह-गीत गाकर स्त्रियाँ वातावरण को अधिक उत्तेजित करती है । जैसे कि -

" जब ही महाराजा
चौक में आये -
चंदन चौकी पुराये हो
मथुरा के हो वासी
गंज मोत्यूं हार बनाये हो
मथुरा के हो वासी " ।

पहाड़ों पर विवाह के समय एक - दूसरे के ससुराल वालों के नाम लेकर मीठी मीठी निखालस भाव से गालियाँ गायी जाती है । इसका वास्तविक प्रतिबिंब भी इनकी कहानियों में दृष्टि-गत होता है । जैसे कि -"विवाह हुआ और वह विवाह बहुत दिनों के लिए कुमाऊँ के परिवारों में चर्चा का विषयबन गया ।....

1 - "चौदह फेरे" - शिवानी - पृ० 93

ऐसी ऐसी मीठी गालियाँ गायी गयी कि समधी रस-विभोर हो उठे ।"[1]

वैसे तो कई कहानियों में विवाहोत्सव के गीत प्रस्तुत है ।

"मेरा बन्ना है फूल गुलाब
बन्नी मेरी चम्पा कली
शीश बन्ने के कलंकी सोहे
सहेरे की अजय बहार ।"[2]

विवाह - कार्य चाहे कितने ही हर्षोल्लास एवम् खुशियों के साथ परिपूर्ण किया जाय किंतु इसके पश्चात् कन्या की विदाय-बेला परिवार जनों के लिये बड़ी दुःखद होती है । बचपन से जिस घर में पली है, लाड़-प्यार-शिक्षा आदि ग्रहण करके उसे अपना सब कुछ त्याग करके ससुराल जाना होता है । इस व्यथा से व्यथित माता-पिता का चित्रण भी शिवानी से अछूता नहीं रहा है । "विदा हुई तो अम्मा अपनी समस्त कटुता भूल-बिसर, जया को छाती से लगा जोर से रो पड़ीं । बंटी बच्चों की तरह सिसक रहा था । ताई ऐसी शोक विह्वला अपनी कोख की जाई की विदा में भी नहीं हुई थी ।"[3]

शादी ब्याह के वक्त भी जाति वर्ण के ऊँच-नीच के भेद भी दृश्यमान है । कुमाऊ आमतौर ब्राहमन बिरादरी से छाया हुआ है फिर भी ऊँच-नीच वर्ण व गोत्र के दृष्टांत मिलते हैं । तब कुमाऊँ में कन्या का रूप रंग नहीं, कुल गोत्र देखा जाता था ।"[4]

1 - "चौदह फेरे" शिवानी - पृ. 6
2 - चल खुसरो घर अपपने - शिवानी - पृ. 52
3 - अतिथि - शिवानी - पृ. 121
4 - चौदह फेरे - शिवानी- पृ. 6

कुमाऊँ तब सनातनी संस्कारों की जटिल बेड़ियों में जकड़ा था । एक साहसी कुमाऊँनी तरुण जापान भाग गया था और उसकी विदेश यात्रा से क्षुब्ध होकर कुमाऊँ के महा-पण्डितों ने उसके पूरे परिवार को जाति च्युत कर दिया था ।[1]

इसी प्रकार "पर्वतीय समाज की एक प्रतिष्ठित ब्राहमण बिरादरी की कन्या ने जब कुमाऊँ के प्रथम अंत-प्रदेशीय विवाह का द्वार खोला तो पूरा कुमाऊँ थर-थर काँप उठा था । एक वर्जित बिरादरी ब्राहम्ण ने ऐसी स्वयंवरा के पिता को मार्ग में रोक दिया था. "क्यों गुरु, विवाह ही करना था तो बाहर क्यों गए, हम क्या बुरे थे ।"[2]

कई स्थानों पर कुश कन्या का जिक्र होता है । "सुरंगमा", "अतिथि" आदि उपन्यासों से यह ज्ञात होता है । "अतिथि" में माधवबाबू जया के पिता से कहते हैं मैं सिर्फ कुशकन्या और हल्दी लेने आया हूँ, मुझे और कुछ भी नहीं चाहिए ।[3]

कन्यादान हरेक माता-पिता अपनी संतान के सुखी गृहस्थी के लिए देना अपना फर्ज समझते हैं । दहेज रूपी दैत्य का आविष्कार इसी से उद्धृत हुआ है । दीवारों पर "हम दहेज न लेंगे न देंगे " या "दहेज प्रथा का नाश हो" आदि

1 - "चौदह फेरे" - शिवानी - पृ. 8

2 - श्मशान चम्पा - शिवानी - पृ. 12

3.- "अतिथि" - शिवानी - पृ. 27

4 - वातायन - शिवानी - पृ. 142

चारकोल अंकित पंक्तियाँ देखकर लगता है लोग अब उस कुप्रथा के उन्मूलन के विषय में गंभीरता पूर्वक सोचने लगे हैं । किंतु किसी भी कुप्रथा का उन्मूलन हम केवल दीवारों पर लुभावनी पंक्तियाँ लिख या विवाह के निमंत्रण पत्रों पर सगर्व घोषणा कर ही नहीं कर सकते । आज वही दहेज बड़े चातुर्य से ग्रहण किया जाता है जैसे कि फ्रीज, टी॰वी॰, वी॰सी॰आर आदि चीजों को सर्व प्रथम पहुँचाया जाता है और अंत में लड़की सिर्फ एक सूटकेश लेकर ही जाती है ।[1] "झूला" और "शाप" कहानियों के अंतर्गत भी दहेज का उल्लेख मिलता है । विवाह जैसा पावन संस्कार भी आज दूषित होने से वंचित नहीं रहा । भले ही कन्या श्यामवर्णा हो, कर्कशा हो, उसका चेहरा पुरुषोचित हो किंतु उसका पिता वर की नीलामी में सर्वोच्च बोली बोलने में समर्थ है तो सब दोष क्षम्य है ।[2]

यौन - कुण्ठा - वासना - प्रेम :

सैक्स जीवन का सबसे जघन्य किन्तु सबसे पवित्र सत्य है । अनादि काल से मनुष्य की आन्तरिक तथा बाहय प्रवृत्तियों को रूप देती आने वाली काम-वासना सृजन की मूल प्रेरणा है तो मनुष्य को पशुता से ऊपर उठने में बाधा देने वाली सबसे बड़ी शक्ति भी है । किसी भी भाषा के साहित्य की रचनाओं में अधिकांश स्त्री-पुरुष के यौन-आकर्षण एवं उसके सम्बन्धित ही वर्णन प्राप्त होगा ।

1 - वातायन - शिवानी - पृ॰ 142
2 - वही - शिवानी - पृ॰ 23

"काम अभुक्ति या कुण्ठा कई प्रकार से हो सकती है । उच्च लक्ष्य की अप्राप्ति, सामाजिक बन्धनों के कारण अपनी इच्छाओं की अपूर्ति, दाम्पत्य जीवन में अनुकूल सहयोगी का पति या पत्नी की अलब्धि आदि यौन-कुण्ठा के कारण होते हैं । दाम्पत्य जीवन की पराजय से उत्पन्न कुण्ठा अधिक देखने मिलती है ।"[1] "कुण्ठित दशा में व्यक्ति को असंतोषजनक एवम् व्यग्रतापूर्ण वैकारिक तनाव आ जाता है ।(Emotional tension) इस अवस्था में व्यक्ति ऐसी प्रवृत्तियाँ करता है जिससे वह तनाव दूर हो।"[2]

इस यौन-कुण्ठा की चार प्रतिक्रियाएँ होती है । इसके अंतर्गत शिवानीजी के उपन्यासों में निर्दिष्ट कुण्ठाओं को विभाजित करने का प्रयत्न किया गया है ।

॥1॥ इच्छापूर्ति का तीव्र प्रयत्न :- साधारणत: देखा जाता है कि कुण्ठित व्यक्ति अगर निराश और दुर्बल नहीं हैं तो वह अपनी कामतृप्ति के लिये अधिक प्रयत्न करता है । इसे प्राप्त करने के लिये वह सब कुछ भी करने को तैयार हो जाता है ।

शिवानी के "गैंडा" लघु उपन्यास के अंतर्गत राज और रोहित के पपत्र वैसे ही है । राज अपने पति के बदसूरत चेहरे से अपनी वासना तृप्त नहीं कर सकती है । इसलिये अपनी सखी सुपर्णा के पति रोहित को अपनी जाल में फँसाती है और अपने पति को परदेश भेज कर खुद यहाँ एक होटल में रिसेप्टनीस की नौकरी करती है।

1 - हि.उपन्यास सा. का अध्ययन . डो. गणेशन - पृ. 317
2._ Page : Abnormal Psychology P. 33

वही डबल बेड कमरा बुक करवा कर रात दिन रोहित के साथ कामतृप्ति करती है । यहाँ पर घरेलू झगड़ों एवं समाज की टीकाओं के बावजूद भी दोनों इच्छापूर्ति के तीव्र प्रयत्न करते हैं ।

इसी प्रकार अपनी दमित वासना को तृप्त करने के लिये "अतिथि" की लीना ब्याह से पहले ही अनेक पुरुषों से संबंध रखती है और कनक प्रेमलग्न के बावजूद भी संतुष्ट न होने से हब्शी से ब्याह करती है । "सुरंगमा" के संगीत मास्टर गजानंद और मंत्री दीनकर ऐसे ही पात्र हैं । दीनकर एक मंत्री होते हुए भी अपनी पत्नी से अतृप्त होने के कारण अपनी पुत्री की टयूटर सुरंगमा से अपनी काम-वासना तृप्त करता है इसके लिये वह अपमान व कलह प्राप्त करता है।

"भैरवी" में अघोरी बाबा भैरव नाथ साधु होते हुए भी माया को अपनी पत्नी के रूप में रखते हैं और अपनी काम-कुण्ठा को तृप्त करता है अंत में जब साँप काटने से माया चल बसती है तो स्वरूपवान चन्दन पर आसक्त हो जाता है और कामतृप्ति के लिये बाहर से दरवाजा बंद कर माया को अग्नि संस्कार के लिये ले जाता है किंतु चन्दन बचने के लिये खिड़की से कूद कर भाग जाती है । माया भी बाल विधवा थी किंतु अपनी दमित वासना को छुपाना असंभव होने से साध्वी का मुखौटा पहनकर अघोरीबाबा के पास आ गयी थी ।

इस प्रकार "महोब्बत" लघुउपन्यास का प्रोफेसर और "विवर्त्त" का फिलिस परदेशी एवम् परिणित होते हुए भी अपनी वासना-इच्छा संतृप्त करते हैं। "विषकन्या" की कामिनी, "रथ्या" की वसंती, "कैंजा" का सुरेश, "श्मशान चम्पा" में चम्पा एवं जूही जो मुस्लीम से ब्याहती है वेअपनी इच्छापूर्ति के लिये भरसक प्रयत्न करते हैं। "चल खुसरो घर अपने" के अंतर्गत उमा जोशी कालिज में पढ़ते हुए भी अपनी वासना को संतृप्त करवा कर पैसे भी कमाती है और एक बार ऐसी ही युवतियों के साथ वह पकड़ी गई। "माणिक" के नीलम का पात्र जो 50 वर्षीय होने के बावजूद भी अविवाहीता थी किंतु अब इस उम्र में अपनी दमित वासना भजातीय दीना बाटलीवाला के द्वारा संतृप्त करती है। इसके अतिरिक्त "मायापुरी" की शोभना और सतीश "कृष्णकली" में मंत्री विद्युतरंजन और वेश्या पन्ना, मुनीर तथा "रतिविलाप" की पतिहंता हीरा वृद्ध मालिक से अपनी कुण्ठा की पूर्ति करते हैं। सिर्फ शोभना अतिशय इच्छा के बावजूद भी सतीश से शरीर सुख प्राप्त नहीं कर सकती है किंतु कुण्ठित जीवन व्यतित कर इच्छा तृप्ति के प्रयत्न करती है अंत में क्षणिक सुख प्राप्ति होती है।

"चौदह फेरे" के कर्नल, मल्लिका सरकार तथा सर्वेश्वर द्वारा भी इस बात की पुष्टि होती है। सर्वेश्वर तेरह बार ब्याह चूका था फिर भी अपनी कुण्ठा तृप्त करने अहल्या से ब्याहने का प्रयत्न करता है। "किशनुली" के अंतर्गत सदाचारी

संयमी शास्त्रीजी भी किसना पगली के शारिरिक उभारों से पीड़ित कर अपनी काम-कुण्ठा तृप्त करते हैं ।

उक्त सभी उदाहरण काम-कुण्ठा की तृप्ति के तीव्र प्रयत्न के हैं । शिवानी की अन्य कहानियों में "चलोगी चन्द्रिका," "करिएछिमा", "पुष्पहार", "तोप" आदि में इस बात की पुष्टि होती है । तोप 50 वर्ष की आयु की होते हुए भी वासना को तृप्त करने कई बार ब्याहती है, "करिए छिमा" के नायक मंत्री ने कोढ़ी की ओडियार में समाजोच्युत युवती के संग चार दिन तक अपनी कामुकता तृप्त की ।

§2§ परिस्थिति से समझौता :- कामकुण्ठा की इन प्रतिक्रिया में व्यक्ति अपनी सीमाओं तथा परिस्थिति की विवशता को पहचानकर उनसे समझौता कर लेता है और परिस्थिति से संघर्ष करने के बदले उसके अनुकूल होकर जीने लगता है । "गैंडा" में भी श्री वैद, "अतिथि" में कार्तिक, "विषकन्या" में दामिनि, "रथ्या" में विमलानंद, "कृष्णकली" में पन्ना तथा कली, "श्मशान चम्पा" में चम्पा और "सुरंगमा" में राजलक्ष्मी एवम् "कैंजा" में नन्दी ये इसी प्रकार के पात्र हैं । राजलक्ष्मी अपनी संतान अवैध न गिनी जा सके इस हेतु परिस्थिति से समझौता कर के फिलिप्स से ब्याह कर लेती है । फिर वह परिस्थिति के अनुकूल अपने पति गजानंद के साथ वापस चली जाती है । "अतिथि" में भी कार्तिक सुधा के साथ तथा अनेक लड़कियों के साथ रंगरेलियाँ मनाकर अंत में समझकर पत्नी जया के पास ही चला जाता है ।

§3§ बलहीनता की स्वीकृति तथा निष्क्रियता :-

नई कुण्ठित व्यक्ति अपनी इच्छा-पूर्ति का सक्रिय प्रयत्न नहीं करता है और अपनी असमर्थता तथा बलहीनता को स्वीकृत कर निष्क्रिय होकर सब कुछ सहन कर लेता हैं । जिसमें, पराजय की वृत्ति अधिक मिलती है । "अतिथि" की जया सास, ननद तथा ताई के कटुव्यवहार को भी सहनकर लेती है तथा कार्तिक के प्रति की वासना को दबा लेती है । इसी प्रकार "भैरवी" के कुन्दन और चन्दन तथा राजेश्वरी भी अपनी दमित इच्छाओं को निष्क्रियता की ओर ढ़केल कर सब कुछ सहते रहते हैं । कुन्दन भी राजेश्वरी को बहुत चाहने पर भी अपनी बलहीनता समझकर शराब पी-पीकर अपने आपको मीटाने का प्रयत्न करता है । सुरंगमा अपने आपको बलहीन समझकर वेश्या का नाम स्वीकृत कर लेती है ।

"चौदह फेरे" की नन्दी मल्लिका सरकार §सौत§ को कुछ कर नहीं सकती है और अपने आपको निर्बल स्वीकृत कर अंत में साध्वी हो जाती है । यह एक प्रकार का व्यक्तित्व दमन है ।

§4§ विनाशकारी या आक्रमक प्रवृत्तियाँ :-

काम-अभुक्ति की चौथी प्रतिक्रिया व्यक्ति का अपनी शक्तियों को किसी प्रकार आक्रमक और विनाशकारी प्रवृत्तियों में लगाना है । दमित वासना के तनाव केकारण दूसरों को भी किसी तरह व्यथित करने की वृत्ति छा जाती है । यौन-

वासनाओं के दमन की प्रतिक्रिया के रूप में कुण्ठित व्यक्ति अन्य की वासना को भी दमित देखना चाहते हैं ।

इस प्रतिक्रिया के अंतर्गत शिवानीजी के "गेंडा" लघु उपन्यास की सुपर्णा का पात्र है । जो अध्ययन काल से स्पर्धा करती रहती अहंदिप्त सखी राज से बदला लेती है । राज अपने पति को वश कर लेती है किंतु अपना सोहाग वापस लेने अपनी इच्छा की पूर्ति के लिये पीली मस्जिद के बाबा के तावीज के द्वारा राज का नाश करती है । इस प्रकार ऐसे ही विनाशक या आक्रमक अन्य उदाहरण भी प्रस्तुत हैं ।

"चौदह फेरे" की अहल्या अपनी दमित इच्छाओं की पूर्ति के लिए आक्रमक रवैया अपना कर विवाह के एक दिन पूर्व राजूदा से ब्याह करने पहाड़ चली जाती है ।

"सुरंगमा" की बिनीताजी भी सुरंगमा के यहाँ जाकर क्रोध में आकर ज्यों-त्यों सुनाती है और अंत में वेश्या का उपनाम देकर अपनी इच्छा की पूर्ति करती है ।

"कस्तुरी मृग" में पूरे जीवनभर एक वेश्या के घर रहकर अपनी काम-वासना संतुष्ट करता रहा फिर भी अंत समय तक अपने पुत्र के अरमानों की ओर नहीं देखा । अपनी दमित वासना की सतृप्ति एवं क्रोध से पुत्र को श्राप देता है और जीवनभर पुत्र अपरणितरहता है ।

इसी प्रकार से "श्मशान चम्पा" के अंतर्गत भी जया ने अपनी वासना को संतृप्त करने के लिये आक्रमक रूप ले लिया और मधुकर से

ब्याहने के लिये चम्पा को पत्र लिखकर श्मशान चम्पा का खिताब दिलवाया तथा समाचारपत्रों के द्वारा उसकी अभिशप्त जीवनी की धज्जियाँ उड़ाई गयी ।

ग्राम्य जीवन - विविध प्रवृत्तियाँ :-

ग्राम्यजीवन अपने आप में एक विशिष्ट स्थान रखता है । शिवानी ने जो ग्रामीण जीवन के उल्लास व आनन्द है इसका अद्वितीय चित्रण प्रस्तुत किया है । बृहत परिवार तथा अपने अकर्मण्य पति के बावजूद तथा दाम्पत्य जीवन का असहय दुःख झेलकर भी आनंद में रह कर हँस हँस कर गाती पतिपरायण स्त्री जीवन का भी चित्रण है । वह गा-गाकर आटा पीसती रहती है - "चक्की पीसै नार दुखियारी फूटे तिनके भाग जो कंता घर बैठारी"[1]

लोगों की जिज्ञासा वृत्ति एवम् खरीदारी तब होती जब गाँव में कोई खोमचेवाला, चूड़ियाँ बेचने वाला या नट अपनी कला दिखाने आता है तथा कोई जादूगर या बाजीगर अपना खेल दिखाकर भोले ग्रामीणों को स्तब्ध करता है । इनका चित्रण शिवानी ने बड़ी सफलता से किया है । जात-पात के भेद भूलकर एक परिवार के सदस्य सा व्यवहार वाकई गाँवों में ही मिल सकता है । गाँव में बहुत दिनों के बाद मौला बक्स चूड़ीवाला आता है तब लड़किया, बहुएँ, बूढ़ियाँ उसे घेर लेती है । वह चादर बिछाकर धीरे धीरे अपना सामान निकालता रहता है और लड़कियों का इन्तज़ार बढ़ाता रहता है । सबसे परिचय नवीन करता है - "अरी मोतियाँ तू तो दो ही महीने में इतनी लम्बी हो गई । सल्ली ब्याह हो गया हो लगता है ? बड़ा चर्यों पहना है री ।"[2]

1 - "गवाह" - शिवानी - पृ. 13
2 - "मायापुरी" - पृ. - 103

दाढ़ी प्रिय मौला से सरल मज़ाक आदि चलता है । एक सुन्दरी चुलबुली बहू दाढ़ी मुड़वाने के लिय मज़ाक में कह देती है तब मौला कहते हैं - "हत हरामी, कल तक इसी कुरते से तेरी नाक पोंछी थी, आज मुँह लगती है ! कहती है दाढ़ी मुंडवा दो ।"[1]

मौला सब से बेटी सा व्यवहार व उद्‌बोधन से अपना व्यापार करता है । जब भीड़ छट जाती है तो शोभा को कहते हैं - बेटी, जी छोटा मत कर । उस परवरदिगार की मर्जी थी.... तुम दुर्गा को लेकर नैनीताल आ जाओ । वहाँ दुर्गा को डोक्टरनी को भी दिखा सकती हो, फिर खुदा की दुआ से मैं दो पैसे कमा लेता हूँ । सुलेमान नेक बेटा है, जो कुछ कमाता है, मेरे ही हाथ में धर देता है । तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होगी ।"[2] इस प्रकार एक मुस्लिम श्रमिक होते हुए भी मौला का अनन्य स्नेह एवम् वात्सल्य गाँवों के जीवन की मधुरता को व्यक्त करता है ।

गाँवों में आनेवाला बाजीगरों का व्यक्तित्व भी उतना ही रहस्यमय था । कानों में फीरोजा गुंथे बड़े बड़े बाले, ढीलमढाल कुर्ता, रंगीन पैबंद लगी वास्कट, कंठ में काली डोरी में गुंथी तावीज, हाथ में डमरू .... "जमूरे काटूं ?

"काट दें",

उछालूं ?

उछाल दे उस्ताद !

काट कर तेरी बोटी उछालूंगा लड़के । संभल के जवाब दे ।"

दिया ।......... तब आ जा लड़के । खुदा का नाम लें, कमजोर दिलवाले मेहरबान यह तमाशा न देखें । उस्ताद झलमलाती

1 - "वही" पृ॰ - 103

2 - "मायापुरी" - शिवानी - पृ॰ 106

छुरी लेकर जमूरे को सचमुच ही धूल भरे चौराहे पर लिटा मैली चादर से ढांक देता .... छुरी भोंकी जाती, जमुरा छटपटाकर दम तोड़ देता । उसकी गर्दन इधर - उधर हिलाता बाजीगर दूसरे परिच्छेद की भूमिका बांधता.... कभी फड़फड़ाते कबूतर को अदृश्य कर दर्शकों को भ्रमजाल में उलझाता रहता ।" [1]

ग्रामीण भोली - अनपढ़ प्रजा का मनोरंजन भी इसी बाजीगर, नट, सँपेरे आदि के द्वारा ही होता है ।

कभी इन्हीं सँपेरों की विचित्र वेशभूषा, प्रमुख आकर्षण थी । कन्धों पर बांस के कांवर से लटकी गेरुआ थैली में बंधी टोकरियाँ और उन टोकरियों से क्रुद्ध फूत्कार छोड़ते हुए एक से एक भयंकर विषधर शंखचूड, धामन ;...... सिगरेट के डिब्बे में बंद काला बिच्छू । फीरोजा मूंगा जड़ी दुनाली बीन पर अनोखी धुन, कई रससिद्ध दर्शक चवन्नी देकर गुरु गोरखनाथ वाली फरमाइशी धुन को सुनते । स्वेच्छा से विषधर को उत्तेजित कर सँपेरा अपनी कलाई पर नागदंश दिला रक्त छलछला देता, और फिर एक विचित्र सी विषबूटी निकार दंश पर घिस देता । देखते ही देखते सद्य: विज्ञापित जड़ी ग्रामीण भोली जनता में बीक जाती । [2]

ऐसे ही नट के खेल दर्शकों को मनोरंजित करते हैं । "आगे आगे ढोल बजाता नट, पीछे पीछे चल रही दुबले पतले सींकिया नंग-धड़ंग पुत्रों की युगल जोड़ी । नट भीड़ के पुष्ट घेरे से सन्तुष्ट होकर नन्हें नटो को ललकार ढोलक पर मांसल थपेड से ठेका लगाता...... देखते ही देखते उन नन्हे नग्न शरीरों को पिताका आदेश रबर-सा लचीला बना, तोड मरोड कभी बनता बिच्छू, कभी मोर । नट की भांति निर्जीव कठपुतली का तमाशा भी उनको उल्लसित करता ।" [3]

1 - "वातायन" - शिवानी - पृ. 13
2 - "वातायन" - शिवानी - पृ. 18
3 - "वही" - शिवानी - पृ. 19

त्यौहार व पर्वों का उत्सव :- गाँवों में जो प्रेम-भाव व सहयोग की भावना है वह अन्यत्र कम देखने मिलती है । किसी भी त्यौहार व पर्वों का उत्साह अनोखा होता है । जाति-पाति, छोटे-बड़े आदि का भेद भूलकर सभी त्यौहार या पर्व मनाये जाते हैं । शिवानी जी ने खुद अपने ही संस्मरण में लिखा है ।
"नमाज खत्म होने पर पिताजी के स्टेनों अलवी साहब हमें मेला दिखाने ले चलते......... दिन डूबे मेले से लौटते तो अगली ईद का इन्तजार रहता ।" [1]

होली हो दीपावली, दुर्गापूजा या माघोत्सव हो या गाँव के किसी भी व्यक्ति के यहाँ जन्मोत्सव हो तो इसका आनंद-उल्लास सारे गाँव में छा जाता । शिवानीजी ने "वातायन" में इसे प्रस्तुत किया है । "दशहरा-दीवाली हो या ईद-बकरीद, किसी भी उत्सव का संपूर्ण रूप से निर्वाह आज सबके लिये संभव नहीं रह गया है । महोत्सवों का आनन्द हमने जो उठाया है उसकी कल्पना आनेवाली के लिए दन्तकथा बनेगी । मेले में उल्लास सर्वत्र एक-सा ही रहता चाहे वक उत्तराखंड की नन्दा देवी का मेला हो, लखनऊ की गुड़ियों का या रामपुर की ईद का । कांकरेजी कछोटा बाँधे बुन्देलखण्डी ललनाओं का दिशाएँ गुंजाना - "आ जाऊँगी बड़ी भोर दहिया लैके, ना मानो चुनरी धरि राखौ मोतियन लागी छोर आ जाऊँगी भोर ।" [2]

"सौराष्ट्र के मेले की दूसरी ही छटा रहती .... नन्दा देवी के मेले का भला क्या कहना ? बलि के लिए महिष जाता भी तो ऐसे झूमकर जैसे सेहरा बाँधे दूल्हा हो । पीछे पीछे

1 - चौदह फेरे - शिवानी - पृ॰ 9
2 - "वातायन" - शिवानी - पृ॰ 26

गाती बजाती भीड, काले लहँगे, कमर पर कसा धोती का आँचल कुठ में हुलसती मूँगे चाँदी की मालाओं का वैभव और स्वर लहरी की मिठास - "मार झपका नन्दादेवी कौतिका लागों मार झपेका, मार झपेका मैं के ले जांण दीयो ज्यू हो मार झपेका ।"[1]

"आमादेर शान्ति निकेतन" के अंतर्गत भी सावन के झूलों के पर्व का उल्लेख किया है ।

अल्माड़ा की एक अनजान मालदारिन की पगली लड़की की अवैध संतान का जन्मोत्सव भी पूरे गाँव ने बहुत आनंद उल्लास से मनाया ।[2] यही है गाँव के लोगों की आत्मीयता, ग्राम्यजीवन की मधुरता । जन्मोत्सव षष्ठी पूजन, छट्ठी भोज आदि बड़े आनंद से मनाया जाता है जो गाँवों में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है । "चौदह फेरे" उपन्यास के अंतर्गत भी कर्नल के वैवाहिक जीवन की दरार से नन्दी ने चचेरे देवर के पार्श्व में बैठ कर षष्ठी-पूजन किया ।[3]

"चलोगी चन्द्रिका" के अंतर्गत भी पुत्र-जन्मोत्सव का वर्णन मिलता है । उस दिन पर विशेषरूप से स्त्रियाँ गा-नाचकर आनंद व्यक्त करती है । जैसे उक्त कहानी में बड़े भाई के पुत्र जन्मोत्सव पर आँचल कमर में खौंस कभी दीदी को पंजीरी खिलाती, कभी अनुभवी जननी की भाँति नवजात शिशु को छाती से लगा दुलराती, लोरियाँ गाती और कभी सोहर की स्वर लहरी झुमा देती, जच्चा किसकी हो तुम कुलबधू, जच्चा कवन सजन की धीय महर महर हरे वाकरे ।...... कभी घुंघरु बांध नाचती गाती..... सास मोरी दूँढे, ननद मोरी दूँढे, सैया दूँढेरी गले मैं बैया डाल डाल ।[4]

1 - "वही" - शिवानी - पृ. 27
2 - "कंजा" - शिवानी - पृ. 43
3 - "चौदह फेरे-शिवानी- पृ. 9
4 - "गेंडा" (चलोगी चन्द्रिका) शिवानी - पृ. 88

भैयादूज के प्रसंग को भी मायापुरी के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है । शोभा का खिन्न मन सोचता था - "पारसाल की भैया-दूज पर तीनों राजकुंवर से भाइयों को उसने रोली-अक्षत का टीका किया था, घर के गेहूं घट में पीसकर उसने दही में भीगोकर गोल-गोल कुडकुडे सिंगल बनाए थे । भूरी गायने नया-नया बछड़ा दिया था, उसी गाय के गाढे दूध में लाल पहाडी चावल की खीर बनाई थी ।" [1]

इस प्रकार गाँव में एक अपना-सा अनोखा माहौल अनुभव होता है । कभी कभी अज्ञानता या निरक्षरता के कारण पारिवारिक समस्याएँ उद्‌भवित होती है और तनिक घर्षण -सा भी रहता है । प्रसंगोवश जब परिवार के सभी सदस्य, नाती एवम् सभी सगे सम्बन्धी आपस में मिलते हैं तब अतीत में घटी हुई घटनाओं के विषय में ताने लगाना या व्यंग करना स्वाभाविक होता ही है । "चौदह फेरे" के अंतर्गत जब कर्नल पहाड आते हैं तब सभी आत्मजनों के बीच भी भाभी सुभद्रा की व्यंगोक्ति मुखरा होए बिना नहीं रहती है । वह कह ही देती है, क्यों लला, हमारी बंगाली देवरानी को नहीं लाये ?" [2]

इस प्रकार ग्रामीण वातावरण का माधुर्य हमें उल्लासित करता है तो कई स्वभावोगत वैमनस्य, अज्ञानता, या कमजोरियाँ भी दृष्टिगत होती है । "मायापुरी" के अंतर्गत गरीब ब्राहमण की कर्कशा कलहप्रिया पत्नी के द्वारा ग्रामीण परिवेश की कमजोरी भी ज्ञात होती है । बच्चे की नाटकीय रुलाई से "रुक्की ने दौडकर उसे चिपटा लिया, किस हरामी ने मारा मेरे लाल को ! कौन बदजात है हिजडा । कमीना, कुत्ते की औलाद ! नाम बता मेरे बेटे । उत्तर मिलने पर अपने भाई रामी का झोंटा पकड पिटाई करती है तब पडोसिन ने खिडकी से झांका

1 - "मायापुरी" - शिवानी - पृ• 54
2 - "चौदह फेरे "- शिवानी - पृ• 69

उसकी ओर घमकर बोली, चुडैल तू, तेरा बाप, तेरा ससुर, तेरा मरा खसम, तेरा भर्तार वह सँडमुसँड बाबा जिसके चरण दबाती है । मैंने मारा तो अपने ही भाई को । रानी, अब क्यों नहीं निकलती है बाहर । क्यों बोलेगी अब चोट्टी, हरामजादी, खसम खानी...।" ¹

स्वार्थ एवम् शोषण परक रिश्ते नाते :- प्रत्येक जीव की संवेदना को पहचानने वाले समाज के लोगों में कभी स्वार्थ का नशा भी छा जाता हैं । जिससे खोखले रिश्तों की पुष्टि होती है । "अतिथि" उपन्यास के अंतर्गत जया की ताई का भी इसी प्रकार का चरित्र है । जो कई सालों से जया के परिवार से अनभिज्ञ-सी रही थी किंतु ताऊ के अवसान के पश्चात् अभिन्नता प्रकट करती हुई जया के साथ ही रहती है और निश्छल माँ-सा प्रेम करती है और अपना स्वार्थ साधती है । जब उसे अवगत होता है कि जया अपनी ससुराल से नाराज है तो वे अपनी प्रेमपूर्ण वाणी के आडम्बर से अपनी बहन के लडके के साथ ब्याह करवाने का प्रयास करती है । जिसमें द्वेष और स्वार्थवृत्ति का सामंजस्य देखने मिलता है । इसी प्रकार समाज में उच्च स्थान प्राप्त किये हुए लोग समाज के अन्य लोगों का शोषण करते हैं । जैसे कि "अतिथि" उपन्यास के मंत्री माधवबाबू अपने ऊँचे ओहदे के बल अपने गुमराह, व्यसनी और उद्दण्ड बेटे का ब्याह एक मध्यम वर्गीय बालसखा व शिक्षक की सुंदरी बेटी जया से करवाते हैं। "मायापुरी" उपन्यास के अंतर्गत भी इसी तथ्य की पुष्टि है । मंत्री तिवारीजी अपनी आवश्यकता से अधिक परिपुष्ट बेडोल और उद्दण्ड पुत्री का ब्याह कर्जदार वृद्ध जनार्दनजी के बेटे सतीश से करवाते हैं । वृद्ध जनार्दनजी तिवारीजी के कर्जदार थे, मकान की नींव खुद चुकी थी पर रुपये नहीं थे । लडकी विवाह योग्य हो चुकी थी, लड़का

1 - "मायापुरी" - शिवानी - पृ. 120

डोक्टरी पास कर चुका था पर उसकी शिक्षा में उनकी संचित आय शेष हो चुकी थी । पत्नी असाध्य रोग से पीड़ित थी ।[1] मनुष्य एक विधि के हाथ का खिलौना है किंतु साथ साथ किसी भी व्यक्ति का उत्थान या पतन जनसमुदाय के हाथों में है और मनुष्य हमेशा अपने स्वार्थ की ओर ही देखता है । स्वार्थ पूर्ण होने के पश्चात् सभी नाते रिश्ते या संबंध टूट जाते हैं । "पुष्पहार" कहानी के अंतर्गत यही बात स्पष्ट होती है । मैत्री ने अपने ही गाँव को नंदनवन बनाया लोगों की हरेक सुविधाओं की ओर गौर किया किंतु मैत्रीजी जब अपनी ही प्रेमिका से मिलते वक्त पकड़ा गये तब वही लोग जो उनकी इज्जत करते थे और जयजयकार करते थे उन्होंने ही जनमेदनी के बीच बेरहम से पिटाई की । वही पुष्पहार विषैला हो गया ।[2] दूसरी ओर लोगों की स्वार्थपरारता वहाँ तक पहुँचती है कि मैत्रीजी के नाम से अपना काम करवा लेते हैं इससे भी अधिक कि "उनकी मुहर लगे सरकारी पेड के पन्ने चुराकर चतुर रिश्तेदारों ने उनके जाली हस्ताक्षर ऐन-मैन उतार स्वयं सिफारिशी पत्र बना अपना उल्लू भी सीधा कर लिया था।"[3]

इसके विपरित "सुरंगमा" के अंतर्गत मैत्री दिनकर ऊँची कुरसी पर बैठकर अपने गाँव को विस्मृत कर गया था । वहाँ के लोग ही कहते हैं - "दिनुवा एकदम दो कौडी का निकला । आज मनिस्टर की ऊँची कुरसी पर बैठा अपने बैठाने वालों को भूल कर रह गया है । क्या किया इस गाँव के लिये ? कभी आता भी है तो चोरों की भाँति मुँह छिपाकर नैनीताल भवाली से लौट जाता है ।....... जिस चाचा ने पाला-पोसा, ब्याह किया..... कभी एक पाँच रुपये का मनीआर्डर भी तो नहीं भेजा ।"[4] यहाँ अपना स्वार्थ व कुर्सी का मोह दृष्टिगत होता है ।

1 - "मायापुरी" शिवानी - पृ• 13
2 - "पुष्पहार" शिवानी - पृ• 49
3 - "अतिथि" शिवानी - पृ• 15
4 - "सुरंगमा" शिवानी - पृ• 196

अवैध संतान एवम् अनैतिक आचरण :-

अनैतिक आचरण मनुष्य की एक कमजोरी है जो उसकी कुण्ठित वासना को प्रस्तुत करता है । शिवानी ने इस विषय पर अधिक गौर से देखा है । इन समस्याओं को प्रस्तुत करने का आशय यही है कि हमारा नैतिक पतन कितना हो गया है और इसके लिए जिम्मेदार कौन है ? वैदिक साहित्य में नैतिक आदर्शों पर बल दिया गया है। नैतिक आदर्श ही मानवता के निर्माण में सहायक होते थे, कोरा आदर्श नहीं । वैदिक काल में सदाचार की जो प्रधानता थी अब वह नहीं रही ।" [1]

अब तो राजनीति, समाजनीति, शिक्षणनीति या धर्मनीति में अनीति का ही साम्राज्य प्राय: दृष्टिगत होता है । शिवानी ने "पुष्पहार" "सुरंगमा", "गैंडा" "करिए छिमा", "मुखौटा" आदि उपन्यासों एवम् कहानियों के द्वारा अनैतिक संबंध की समस्या को मुखरित करने का प्रयत्न किया है । "कैंजा", "सुरंगमा," "कृष्णकली", "किशनुली" आदि भी अवैध संतान की समस्याओं की पृष्ठभूमि पर है । "किशनुली" उन्मादिनी थी, नाबालिग थी । पतिव्रता पत्नी एवम् उच्चकुलीन संस्कारी पंडित होने के बावजूद भी शास्त्रीजी किसना से अनैतिक संबंध जोडते हैं और उसकी संतान अवैध संतान सिद्ध हुई ।[2]

"कृष्णकली" में भी कुष्ठाश्रम के पार्वती और असदुल्ला के अनैतिक संबंध के फलस्वरूप कृष्णकली है और पन्ना को माता स्थापित की गई है ।[3] इस प्रकार "करिए छिमा" के अंतर्गत भी मैत्री और हीरावती का प्रेम संबंध और अवैधसंतान का चित्रण है जिसे अपने प्रेमी की

1- "वातायन" - शिवानी - पृ. 86
2- "किशनुली" - शिवानी - पृ. 31
3- "कृष्णकली" - शिवानी - पृ. 65

इज्जत के खातिर हीरावती गला घोंटकर मार डालती है और कारावास सहती है । इसके अतिरिक्त "रतिविलाप" की नौकरानी हीरा के पुत्र की आँखों में अनसूयाने अपने वृद्ध श्वसुर की छबि भी देखी ।[1]

अत: "तोप", "कस्तूरीमृग", "रथ्या", "चौदहफेरे", आदि कहानियों के अनैतिक संबंधों से यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि हमारा नैतिक जीवन व समाज कितना खोखला हो गया है ।"कृष्ण-कली" का विद्युतरंजन, "सुरंगमा" का दीनकर एवम् "पुष्पहार", "करिए छिमा", आदि के मंत्री पात्रों को मुखरित किया है ।

"चल खुसरो घर अपने" की उमा आर्थिक परिस्थिति की कमजोरी के कारण अनीतिधाम से पकडी गयी थी ।[2]

परम्पराएँ, रूढियाँ तथा लोक विश्वास :-

सामाजिक परम्पराएँ एवम् रूढियाँ आज भी प्रचलित है । आज के वैज्ञानिक युग में भी मनुष्य उस अलौकिक अदृश्य शक्ति की और अपना सिर झुका लेता ही है ।

हिन्दु समाज के अंतर्गत अनेक रूढियाँ संलग्न है । अनेक देवी-देवताओं का पूजन प्रचलित है । कुमाऊँ के प्रचलित भैरवनाथ ग्वालदेव की अभ्यर्थना हरेक व्यक्ति करता है और उनमें आस्था रखता है । इसके लिये कहते हैं "अदभूत वरदायी हैं, चितै के ये ग्वालदेव । जिन्हें लोक की अदालत में न्याय नहीं मिलता वे ही अभागे इस अलमस्त औधड़ दानी की अदालत में फरियाद करने आते हैं । फिर देखते ही देखते ये

1 - "रतिविलाप" - शिवानी - पृ. 37
2 - "चल खुसरो घर अपने" - शिवानी - पृ. 41

न्यायप्रिय देवता दूध का दूध और पानी का पानी कर देते हैं । उन्हीं कृतज्ञ फरियादियों की अर्जियाँ यहाँ लटका दी जाती है ।"[1] इसके अतिरिक्त किश्नुली के अंतर्गत भी काखी [पंडिताईन] किश्नुली के वापस लौटने के हेतु भैरवनाथ का उचैंण [मनौती] मानती है ।[2] समाज की अन्य रूढ़ियाँ जैसे कि ब्रैहमभोज, चौदहफेरे पृ. 4 पर, मृतक विधि उसी के पृ. 10 पर, व्रतोपवास भी पृ. 28 पर तथा तीर्थस्थान गमन, आदि का उल्लेख भी उनके साहित्य में दृष्टिगत होता है । जिसकी विस्तृत चर्चा हम धार्मिक परिवेश के अंतर्गत करेंगे । ज्योतिष दर्शन की अभिरुचि भारतीय परिवारों में अधिक होती है । "अतिथि" के अंतर्गत जया के पिताजी एक अच्छे ज्योतिषि थे जिन्होंने जया के भविष्य का रहस्योद्घाटन किया था । । "श्मशान चम्पा" के अंतर्गत भी "भगवती ने पुत्री का नाम धरा था शुभ्रा किंतु दादा ने राशि के नाम की महत्ता बताकर धर दिया जयंति वृश्चिक राशि है वहू यही धरना । लड़की का नाम राशि से नहीं धरा गया तो फिर लडकी ही जन्म लेगी ।"[3]

मनुष्य कभी अपना अनिष्ट नहीं सह सकता है इसलिये अनिष्ट निवारण हेतु सामाजिक लोक विश्वासों का प्रयोग करता है । तांत्रिक विद्या से या मंत्र विद्या से किसी चीज या तावीज से अपना अनिष्ट रोकना या मनचाही चीज प्राप्त करना भी वह नहीं चूकता है । इन बातों का प्रतिबिम्ब "अतिथि", भैरवी", "गैंडा" आदि कहानियों में है । भैरवी के पृष्ठ-26 पर, "अतिथि" के पृष्ठ - 41 पर एवम् "गैंडा" के पृष्ठ 34 पर इन बातों का समर्थन मिलता है ।

1- "सुरगमा" - शिवानी - पृ. 169
2- "किश्नुली" - शिवानी - पृ.
3- "श्मशान चम्पा" - शिवानी - पृ. 20

गैंडा के अंतर्गत पीली मस्जिद के मौलवी साहब ने दी हुई चीज से सुपर्णा अपनी खोयी हुई चीज वापस प्राप्त कर सकी ।[1] चरन ने भी "भैरवी" के अंतर्गत चन्दन से कहा - "चाँद बाबा की मज़ार है यह । हर शुक्रवार को दूर-दूर से लोग आकर यहाँ मन्नत के डोरे बाँध जाते हैं । कहते हैं यहाँ की बंधी डोरी कभी झूठी नहीं होती ।"[2]

तर्पण, पिण्डदान, तुलसी पत्र, मृतक क्रियाएँ आदि का संकेत भी "किशनुली", "कैंजा" एवम् मायापुरी में उद्धृत किया गया है । "जालक" के अंतर्गत भी पिण्डदान, तर्पण, श्राद्ध, रूद्रीपाठ आदि का वर्णन है ।[3]

लोगों की ऊँच-नीच जाति की मान्यताएँ भी "भैरवी" द्वारा प्रदर्शित होती है । राजेश्वरी से माँ ने कहा......."तब ही तो तेरे बाबूजी से मैंने कहा था, लडकी को ईसाइयों के स्कूल में भेज रहे हो, वहाँ तो ऊँची-नीची सभी जातियों की लडकियाँ एक साथ बैठकर पढती है । क्या हमारे ऊँच खानदान की बिटिया ऐरे-गैरे घरों की लडकियों के साथ पढने बैठेगी ?"[4]

आज हम किसी भी साधु या संत पर विश्वास नहीं करते हैं । जब कि एक युग था कि जब सिद्ध साधु संतों से हमारी भूमि भरी पडी थी । सत्य साँईबाबा से लेकर अनेक सिद्ध संत व साधुओं की छाप भी शिवानीजी के साहित्य में जडित है । ऐसे भी महापुरूष थे जो स्पर्श मात्र से कुंडलिनी जाग्रत कर देते थे । यहीं नहीं एक

1 - "गैंडा" - शिवानी - पृ. 34
2 - "भैरवी" - शिवानी - पृ. 26
3 - "जालक" - शिवानी - पृ. 15
4 - "भैरवी" - शिवानी - पृ. 42

बार उन्होंने अनेक वैज्ञानिकों के सम्मुख उनकी शंका का समाधान क.के स्तब्ध कर दिया । परमहंस विशुद्धा नन्द, रामठाकुर, माधव पंगला, दिगम्बर बाबा आदि की सिद्धियों का वर्णन से उनके दर्शन की तीव्र लालसा जाग्रत होती है । [1]

परलौकिक आत्मा के सम्बंधी आस्थाएँ :-

आज के वैज्ञानिक युग में हम चाहे मानने को तैयार न हो किंतु इस बात की सम्पुष्टि शिवानी ने अपने साहित्य में अवश्य की है कि पारलौकिक आत्माएँ पृथ्वी पर है । इसके लिये उन्होंने कई नीजि अनुभव प्रस्तुत किये हैं । "कृष्णकली" के अंतर्गत भी कोर बेट साहब का बंगला भूतहा था । रात को नौ बजने से पहले हाथ में बन्दूक लेकर शिकारी साहब का परेत और पीछे पीछे चींघाडते तराई के हाथी, हिमालय के भालू और कुमाऊँ के बादमखोर दिखाई देते थे ।[2]

कृष्णवेणी शिवानीजी की सहपाठिनी थी । कई साल बाद पीली साडी पहन समुद्रतट पर वह शिवानी से मिलती है, बातें करती है और चली जाती है । जब शिवानीजी उसका घर ढूंढ कर पहुँचती है तब उसकी पागल माँ ने पूरा घर बतलाया, पीली साडी भी वहीं थी और पता चला कि वह तो कई साल पहले मर चुकी है।[3]

इसके अतिरिक्त भी "वातायन" के अंतर्गत पृष्ठ - 131 पर पारलौकिक आत्माओं के संबंधी कई उदाहरण हैं जिसमें शिवानी के पति के मित्र

1 - "वातायन" - शिवानी - पृ. 78
2 - "कृष्णकली" - शिवानी - पृ. 54
3 - "कृष्णवेणी" - शिवानी - पृ. 28

मेजर नैनीताल में मिल गये घूमते घूमते श्मशान तक आ गये और फिर मिलेंगे कहकर अदृश्य हो गये । इस प्रकार एक जमाने में पारलौकिक आत्माएँ भटकती रहती थी इसकी पुष्टि होती है ।

सामाजिक विषमताएँ :-

समाज परिवर्तनशील है । सामयिक परिस्थितियों के अनुसार समाज में कई परिवर्तन होते रहते हैं । अपितु इनके साथ साथ मानवीय मूल्यों का विघटन एवम् सामाजिक विषमताएँ उद्भूत होती है । सामाजिक विषमताएँ समाज के तीनों स्तरों को असर पहुँचाती है । आज समाज में दो विभिन्न पीढियाँ है, नयी पीढी एवम् पुरातन विचारधारा की पीढी । इनके संघर्ष के कारण समाज में विषमताएँ उत्पन्न होती है । नये समाज में नैतिक, धार्मिक एवम् राजनैतिक मूल्यों का विघटन हुआ है ।

धार्मिक विषमता :- पुरातन काल से धर्म एक ही रहा है, मानव धर्म । किंतु आज इसी धार्मिक मूल्यों को विस्मृत कर मनस्वी आचरण होता है । धर्म का एक मुखौटा ही रहा है और सिर्फ आडम्बर ही देखने मिलता है । धर्म उपदेशक, साधु-संत जोगी आदि सदाचारी संयमी जीवन जीकर समाज में धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों का एहसास करवाते थे । उनका तेजोमय जीवन समाज का पथदर्शक बन जाता था किंतु आज बाहयाडम्बर ही अधिक देखने मिलता है फलत: धार्मिक आस्था टूट गई है और समाज धीरे धीरे धर्मविमुख हो रहा है । साधुओं द्वारा अनैतिकता, काम वासना

जांगियों द्वारा ऐशो-आराम तथा पण्डितों एवम् धर्मगुरुओं द्वारा धूर्तता आदि से लोगों की श्रद्धा डगमगाती है । शिवानीजी ने इसका उल्लेख "भैरवी", झरोखा", "कृष्णकली", "चौदहफेरे" आदि कहानियों में किया है जिसकी विस्तृत चर्चा हम आगे धार्मिक परिवेश के अंतर्गत करेंगे । धर्म की परिभाषा सीमित हो गई यह भी कारणभूत है ।

संक्षेप में समाज के अंतर्गत धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक विषमताएँ कुछ कुछ अंश में दृश्य है ।

समाज के अंतर्गत विविध जाति-पाँति तथा वर्ण के लोगों का वर्णन है । शिवानीजी की कहानियों में खासतौर पर कुमाऊँ परिवारों का वर्णन अधिकतर देखने मिलता है । ब्राह्मण परिवारों में उच्च-नीय गोत्र-कूल है । जैसे कि "मायापुरी" में "गोदावरी का विवाह सभ्रांत परिवार में हुआ था, उसके पति इंजीनियर थे । दुर्गा का विवाह एक उच्च कुलोत्पन्न ब्राह्मण-पुत्र से ही हुआ पर पति क्लर्क थे ।" 1

हिन्दु धर्म अपने स्थान पर था ही किंतु सामाजिक या पारिवारिक समस्याओं के कारण या अन्य परिवेशों में रहने के कारण धर्मान्तर भी होता था । जैसे कि "श्मशान चम्पा" की जूही मुस्लिम धर्म अंगीकार करती है । "सुरंगमा" की नायिका राजलक्ष्मी बंगालिन थी, ब्राह्मण संगीत मास्टर से ब्याहती है और रॉबर्ट से नाटकीय ब्याह करके इसाई धर्म अपनाती है । इसके अतिरिक्त नाथपंथी अघोरी साधुओं का भी जोर था ।

शिवानीजी ने लिखा है कि "हमारे जिन धार्मिक सांस्कृतिक अनुष्ठानों ने अपने सुन्दर स्वाभाविक रूप को स्वयं ही विकृत कर अपना नैतिक प्रभाव लगभग खो दिया है उन्हीं हम अब अपने होली के रंगीले अनुष्ठान की भी गणना कर सकते हैं । परिष्कृत सभ्य गृहों में भी समाज के इस औदार्य का लाभ उठा गृहवासी अपने उद्दंड अशिष्ट आचरण से इस पावन पर्व की सुष्ठु रम्यता को स्वयं ही विकृत कर देते हैं ।" 2

1 - "मायापुरी" - शिवानी - पृ. 7
2 - "वातायन" - शिवानी - पृ. 133

जब मनुष्य अपनी स्वार्थ भावना को अधिक विकसित करता गया तब ही आर्थिक विषमताओं का भी प्रादुर्भाव हुआ और अधिक जटिल बनती गई । गरीब और अमीर के वर्ग-भेद भी इसी कारण निर्मित हुए ।

शिवानी की कहानियों में एक ओर राजा एवम् रानियों की चर्चा है तो दूसरी ओर गरीब तथा श्रमिक लोगों की भी चर्चा है । बड़े होल या शामियानों में बादशाही व शानदार पार्टियाँ तो दूसरी ओर रोटी के टूकडों के लिये तरसते गरीब लोगों का भी वर्णन है । हजरतगंज के एक "चाटकेन्द्र" जहाँ के एक पत्ते का मूल्य अन्यत्र बिकते चार केन्द्रों से तिगुना है वहाँ चटखारे लेते लोग तथा पास ही खड़ी एक दुर्बल, क्षुधातुरा आसन्नप्रसवा भिखारिणी [1] - एवम् नदी के पत्थरों को बड़े मनोयोग से भूनकर सालन बजाने वाला श्रमिक "दोख्याल" [2] के उदाहरणों से प्रस्तुत होता है ।

"मायापुरी" के अंतर्गत भी महारानी के वैभवी प्रासाद, गोरी चीपटे मुँहवाली, रेशमी साडी और मखमली चप्पल पहनी हुई दासी का वर्णन है तो एक ओर सिर्फ बोरों की एक लम्बी कथरी ही ओढ़कर जाडे की रात बिताने वाले दोख्याल का भी वर्णन है ।

वर्तमान काल में भी यही असमानता ने बड़ा विकट रूप ले लिया है ।

राजनैतिक क्षेत्र में आज की तरह विरोधी दल थे जो "अतिथि" उपन्यास के अंतर्गत मंत्री माधवबाबू के विरोधी दल द्वारा अवगत होता है । प्रजा सरल भोली और अनपढ थी उन्हें राजनैतिक बयारों से कोई लगाव नहीं था । राजनैतिक दल इन्हें अपनी ओर आसानी से खींच सकते थे । "सुरंगमा" उपन्यास के अंतर्गत दीनकर अपने गाँव

1 - "वातायन" - शिवानी - पृ. 55
2 - "वही" - शिवानी - पृ. 110

के लागों के वोट इसी प्रकार लेकर मंत्री बन जाते हैं और फिर मुंह दिखाना ही छोड़ देते हैं, गाँव में न तो प्राथमिक सुविधा ला सका है न कुछ । [1]

इस प्रकार राजनैतिक विषमता आज बडी कुटील बन गई है । दलबंधी, वैमनस्य एवम् छल तथा दल परिवर्तन सामान्य बन गया है ।

शिवानी के साहित्य में आधुनिक विज्ञान की भी छाया स्पष्ट होती है । वर्तमान काल में जातीय परिवर्तन के कई किस्से सुनने मिलते हैं । शिवानीजी ने "लिखू" कहानी के अंतर्गत अपनी सखी के जातीय परिवर्तन के विषय में लिखा है । समाज के अंतर्गत खासतौर पर पहाडी में जो-जो लोकोक्तियाँ एवम् कहावतों का उपयोग होता है इसे भी शिवानी ने अपनी कहानियों के अंतर्गत प्रतिबिम्बित किया है । इसका विस्तार से वर्णन हम अगले अध्याय में देखेंगे ।

मध्यम वर्गीय परिवेशों की कुण्ठाएँ एवम् वृत्तियाँ :-

शिवानीजी ने मध्यमवर्गीय परिवेश एवम् शहरी जीवन व्यतित करते परिवरों का भी अंकन अपने साहित्य में किया है । इन परिवारों में जो बाहय आडम्बर तथा खोखलापन है इसे चित्रित किया है । "चौदहफेरे" उपन्यास के अंतर्गत सुभद्रा का बाहय आडम्बर व प्रेम दिखाकर कर्नल से कहती है - "लल्ला,

1 - "सुरंगमा" - शिवानी - पृ॰ 193

घर की लछमी को तुम बहा आये, सुख ही होता तो बेचारी आज इस खुशी के दिन सर मुँडाये संडमुसंड जोगियों के पीछे थोडे ही भागती । आँचल आँखों पर रखकर रोने का उपक्रम करती है पर आँखों के कोर सूखे ही थे अकेले कंठस्वर के नकली उतार-चढाव से ही रोने की भूमिका बाँधी जा रही थी ।"[1]

यही खोखलापन अन्यत्र भी प्रस्तुत होता है । सुभद्रा कर्नल के प्रति अपने पारिवारिक संबंधों का आडम्बर दिखाती है किंतु अहल्या के विवाह में कलकत्ता पहुँचती है जहाँ उसका स्वार्थ एवम् खोखलापन अधिक निखर आता है । किसी को पता न चले उसी प्रकार से अहल्या को यह शादी न करने की सलाह देकर अगले दिन ही अपने पुत्र के पास भगा देती है । और, कर्नल को कहती है "यह देखो तुमसे हमेशा कहा करती थी, लल्ला लडकियों को बहुत पढाना ठीक नहीं, अब क्या मुँह दिखाओगे समधी को ? ...... लल्ला छोकरी तो तुम्हारी मूँछ नीची कर गयी ।"[2]

इसी प्रकार "मायापुरी" के अंतर्गत भी दुर्गा का स्वार्थ और प्रेम का बाहयाडम्बर देखने मिलता है । वह अपने पुत्र की भलाई के लिये शोभा से वचन लेकर चूपके से भगा देती है । शोभा का आदर्शवाद भी यहाँ प्रस्तुत है यद्यपि उसके दिल में सतीश के प्रति बहुत प्रेम है और सतीश भी लुकछूप कर उसे प्रदर्शित करता है यहाँ इसके प्रेम का खोखलापन प्रस्तुत होता है । इसके अतिरिक्त कर्नल मल्लिका के बिना एक मिनट भी नहीं

1 - "चौदहफेरे" - शिवानी पृ. 69
2 - "चौदहफेरे" - शिवानी पृ. 267

रह सकता है । "पुष्पहार" भी इसी तथ्य को अंकित करती है । दुर्गी प्रेमी मंत्री से लुकछुप कर प्रेम करती है और पकड़ा जाने पर चतुराई से प्रेमी को छोड़कर चली जाती है ।[1] "गैंडा" लघु-उपन्यास के अन्दर भी यही प्रेम का खोखलापन राज के पात्र के द्वारा प्रस्तुत है । वेद का राज के लिये आदर्श प्रेम है फिर भी राज रोहित से अनैतिक संबंध रखती है । इसी बाह्याडम्बर का एक और भी उदाहरण है "किशनुली" । संयमी, वयोवृद्ध और उच्च ब्राह्मण शास्त्रीजी किसना को हड़ि हड़ि कह कर बाह्य घृणा प्रदर्शित करते हैं किंतु अपनी दमित वासना उससे संतुष्ट करते थे । आदर्श शिक्षक विष्णुदत्त और वसंती का यथार्थ जीवन भी इसी प्रकार "रथ्या" के अंतर्गत स्पष्ट होता है । विष्णुदत्त वसंती से ही अपनी कुण्ठा संतृप्त कर बाह्याडम्बर प्रदर्शित करता है ।

शिवानीजी ने इसके अतिरिक्त माधवबाबू एवम् दीनकर जैसे मंत्रियों का धार्मिक आडम्बर भी प्रस्तुत किया है । समाज के अंतर्गत रही संशकित दृष्टि को भी चित्रित करना शिवानीजी नहीं भूली है । "चल खुसरो घर आपने" कहानी के अंतर्गत निष्छल सेवा करती कुमुद पर शंकित दृष्टि से देखकर मालती उसे कलंकित करती है ।[2] यही बात सुरंगमा, श्मशान चम्पा आदि के अंतर्गत भी व्यक्त होती है ।

मध्यम वर्गीय कई परिवेशों में आनन्द के लिये और अपनी दमित कुण्ठा संतृप्त करने के हेतु पार्टियाँ, ड्रीन्क्स ब्रिज जैसी भी हरकतें होती हैं । साली और बहनाई (जीजाजी) के बीच निश्छल

1 - "पुष्पहार" - शिवानी - पृ. 48
2 - "चल खुसरो घर आपने" - शिवानी - पृ. 73

ठिठोली, हास-परिहास, विनोद आदि अक्सर चलता रहता है । इसका प्रतिबिम्ब भी "चौदहफेरे" के अंतर्गत धरणीधर और अहल्या के चरित्रों से अंकित होता है ।

वासंती अपनी नानी के यहाँ पति धरणीधर के साथ अहल्या और राजूदाको लेकर जाती है तब रास्ते में जो परिहास साली जीजा के साथ हुआ इसके कुछ अंश उद्धृत हैं । "आस पास कहीं कुली नहीं है क्या ? उठाओ साली साहब एक गठरी तुम और एक राजू, हम तो दोनों तो हनीमुनर्स हैं - आओ डार्लिंग कहते ही उसने वसंती की कलाई थाम ली ।" [1] जब अहल्या अन्य पगदंडी के रास्ते पर चढ गई तो जीजा ने कहा- "क्यों हो साली ज्यू, उन्हीं सिपाहियों के साथ जाने का इरादा है क्या ? [2]

"हाँ, हो सालीज्यू हम भी तुम्हारे विरह में आधे हो गये, पर तुम तो मजे से हनीमून मना रही होगी ।" [3]

कौलेज - विश्वविद्यालयों में किसी भी सुन्दरी लड़की का उपनाम या समाज के अंतर्गत भी किसी भी व्यक्ति का उपनाम कभी कभी अन्य लोगों के द्वारा अंकन होता है । "मायापुरी" उपन्यास में शोभा के लिये "मार्बल" उपनाम कौलेज के लडकों ने उसके रंगरूप व गुण के अनुरूप ही धरा था । इसके अतिरिक्त "चौदहफेरे" के अंतर्गत "कर्नल" का उपनाम भी लोगों ने किसी फौजी ओहदे के कारण नहीं किंतु केवल उसकी छह फूटी विराट देह के बूते पर ही धरा था ।

1 - "चौदहफेरे" - शिवानी - पृ. 101
2 - "वही" - शिवानी - पृ. 116
3 - "चौदहफरे" - शिवानी - पृ. 138

(ख) धार्मिक परिवेश :-

भारतीय समाज में सामाजिक रूढ़ियाँ एवम् अन्ध मान्यताओं की भाँति धार्मिक क्षेत्र के अंतर्गत भी अनेक प्रकार की विसंगतियाँ एवम् बाहयाडम्बर दृश्यमान होता है । समाज दिशाहीन अज्ञान व पंगु हो गया था, सांस्कृतिक पुनर्जागरण के हेतु धार्मिक चेतना का भी संचार हुआ । शिवानी के साहित्य पर इसका भी प्रतिबिम्ब अवश्य रहा है । समाज में अनेक धर्मों ने स्थान लिया था । हिन्दू धर्म, इसाई धर्म, मुस्लिम धर्म के अतिरिक्त कई वर्ण भेद भी दृश्यमान है ।

हिन्दू धर्म में तीर्थस्थान को भी अधिक महत्त्व दिया गया है । "वायुपुराण" में कहा गया है कि तीर्थों में धैर्य एवम् श्रद्धा के साथ इन्द्रियों को वश में रखने से शुद्धि मिलती है । तीर्थान्यनुसरन् धीर : श्रद्धानों जितेंद्रिय: ।"[1] और ऐसे पवित्र तीर्थस्थान पर गुरु का दर्शन मात्र भी हो जाय तो मनुष्य का उद्धार हो जाता है, क्योंकि "मत्स्यपुराण के अनुसार आचार्य हिमा की मूर्ति है । गुरु को ऐसी अवाहनीय अग्नि माना गया है, जिसकी उपासना करने से मनुष्य तेजस्वी बनता है, आचार्यो ब्रह्मणो मूर्ति: गुरुराहवीनयश्च दीप्यमान: स्ववपुषा।"[2]

शिव पुराण में भी कई रोचक कथा है जो हमारी धार्मिक आस्था को पुष्टि देती है । इन धार्मिक आस्थाओं से ही हम अपने देव-देवी की पूजा-अर्चना करते हैं तथा अनेक मनौतियाँ भी रखते हैं ।

1 - "जालक" - शिवानी - पृ० 72
2 - "वही" - शिवानी - पृ० 80

"विश्नुली", चौदहफेरे", "सुरंगमा" आदि कई उपन्यासों में इसका उल्लेख मिलता है ।

"मायापुरी" "अतिथि" आदि के अंतर्गत सत्यनारायण की कथा-पूजा वट सावित्रि पूजन, व्रतोपवास, तीर्थस्थान आदि को चित्रित किया गया है । अपने आराध्य देव-देवियों के प्रति जो आस्थाएँ रखी जाती थी इसका भी अंकन इनके साहित्य में प्रतिबिम्बित है ।

शिवानी ने ही लिखा है कि "वैसे वहाँ {कूमाऊ में} धर्म व्यवस्था की दृष्टि से हिन्दू धर्म ही प्रमुख है । बौद्ध धर्म आठवी शताब्दी तक रहा । इस धर्म के कुछ कुछ अनुयायी आज भी कुमांचल के उत्तरीय भाग जो हाट-दाहमा में मिलते हैं । "गणनाथ", "पीनाथ" आदि नामों से स्पष्ट है कि कुमायू नाथों की तपस्या भूमि भी रही है । कनफटे जोगी नाथ संप्रदाय की परंपरा का आज भी प्रतिनिधित्व करते हैं । शिवोपासना के कारण परी, भूतप्रेत, जादू टोने आदि का भी प्रचलन है ।

"ग्वाल्ल", "एडी", कलविष्ट", चौमू" आदि स्थानीय देवताओं की कचहरी में कब किसने पुनश्चरण की अपील की थी और कैसा तत्काल न्याय हुआ था ।"[1]

शिवानीजी जब अल्मोडा जाती है तो उस दिव्यमूर्ति के दर्शन करने अवश्य जाती हैं । उन्होंने "दरीचा" के अंतर्गत लिखा है कि कुमाऊ में अब भी एक ऐसा अपूर्व देवस्थल है जहाँ वर्षों से न जाने कितने शरणागत साधकों की असंख्य अर्जियाँ पथरीली दीवार पर लटकती रहती हैं, न्याय होने पर पुरानी अर्जियाँ स्वयं

1- "मेरी प्रिय कहानियाँ" - शिवानी - पृ. 9

फरियादी आकर फाड, ग्वालदेव की उस चिरापुरातन मूर्ति के चरणों में भाव विह्वल होकर कृतज्ञता से लौटने लगते हैं । कहा जाता है कि इस अद्भुत न्यायालय में अपनी अर्जी लटकाने पर निर्दोष व्यक्ति अवश्य मुक्त हो जाता है । "दूध का दूध, पानी का पानी" कर देने वाले कुमाऊ के इन उग्र वरदायी देवता की न्यायतुला का एक पलडा भी इधर-उधर नहीं होता । किन्तु यदि अपराधी वास्तव में अपराधी है तो किए का फल अवश्य भोगता है ।"[1] "किशनुली" के अंतर्गत भी पंडिताईन (काखी) उन्मादिनी किसना को वापस घर लौटने के लिए भैरवनाथ का उच्चैण (मनौती) रखती है ।[2]

कई बार धार्मिक अंधश्रद्धा हो सकती है किन्तु इतना यथार्थ भी है कि दुनिया में कुछ दैवी शक्ति अवश्य है । कई ऐसे मंत्र-तंत्र भी है जो विघ्नहर्ता ज्ञात होते हैं । अमंगल या अनिष्ट को टालने के लिये तथा स्वरक्षा के लिए कवच रूप में ऐसे श्लोक(मंत्र) भी है जो शिवानी जी ने अपनी कहानियों में अवगत कराया है । "अतिथि" के अंतर्गत जया के पिता एक अच्छे ज्योतिषि भी थे उन्होंने ही जया को यह मंत्र देते वक्त कहा था, "बेटी, कभी कोई संकट आए, जगजननी का स्मरण करना । सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सवार्थ साधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोस्तुते ।"[3]

इसी प्रकार ऐसी ही मंत्र विद्या से दी गई पीली मस्जिद वाले मौलवी साहब की चीज़ . से सुपर्णा की खोई हुई कीमती चीज(पति) वापस मिलती है ।[4] "भैरवी" उपन्यास के अंतर्गत भी चाँदबाबा की

1- "चरीचा" - शिवानी - पृ. 30
2- "किशनुली" - शिवानी - पृ. 22
3- "अतिथि" - शिवानी - पृ. 41
4- "गेंडा" - शिवानी - पृ. 44

मज़ार का उल्लेख है जहाँ मायादीदी ने पीली जरीदार डोरी बाँधकर तथा चरन ने लाल डोरी बाँध कर अपनी मनचाही चीज माँग ली थी ।[1] दूसरी ओर वही चरन अघोरी बाबा के यहाँ रहती थी और बहुत पुराने ॥12वीं शताब्दी के बने॥ मन्दिर में पूजा के लिये भी जाती है । एक बार माँ की मानी गयी मनौती पूर्ण करने वह जागेश्वर के शिव मन्दिर में भी गयी थी ।[2] आज के वर्तमान युग में भी मनौतियाँ मानते हैं । धार्मिक क्रियाएँ

मनुष्य के जन्म से ही जुड़ी हुई है । ज्योतिष के आधार पर जन्म कुण्डली, षष्टी पूजन, दान-दक्षिणा, विवाह कार्य, मृतक क्रियाएँ तर्पण-पिण्ड देना, आदि धार्मिक रूढियाँ तथा नियमोंका पालन करना पड़ता है । गाँवों में तो बिना कान में जनेऊ डाले दिशा जंगल जाने की धृष्टता भी नहीं की जाती है । "कैंजा" में नन्दी के साथ कुण्डली नहीं मिलने से सुरेश भट्ट जघन्य अपराधी व महा पात की भी बन जाता है ।

अन्य धार्मिक मान्यताएँ :- हिन्दू धर्म में जितना महत्व धार्मिक क्रियाओं का है उतना ही महत्व धार्मिक क्रिया करने वाले का एवम् क्रिया का है । कई धार्मिक क्रियाएँ सिर्फ पुरुष ही कर सकते हैं स्त्री नहीं कर सकती है । हिन्दू शास्त्रों के संस्कार संबंधी विधि विधानों में स्त्रियाँ दृष्टीपात नहीं करतीं । जिस एक अन्य महत्वपूर्ण अधिकार से निरीह नारी को वँचित किया गया है वह है श्राद्ध संपन्न करने का अधिकार । कौन हिन्दू नारी पिंडदान, श्राद्ध तर्पण करने की धृष्टता कर सकती है । शिवानी जी अपने

1 - "भैरवी" - शिवानी - पृ॰ 26
2 - "वही" - शिवानी - पृ॰ 33

पति के श्राद्ध करने की इच्छा से अपने विद्वान मित्र से पूछने लगे तब उन्हें यही उत्तर मिला, "ब्राहमण की सहायता से भी आप पति का श्राद्ध नहीं कर सकतीं । आप स्त्री हैं इसी से आपको यह अधिकार नहीं है, चार-पाँच दिन की छुट्टी दिलाकर पुत्र को ले आइए, बिना तूल-तबीले के यहीं जनेऊ कर उसी से श्राद्ध करवाइए । पिता का श्राद्ध पुत्र ही कर सकता है यही शास्त्र सम्मत है ।"[1]

धार्मिक विसंगतियाँ एवम् बाहयाडम्बर :-

धर्म की पवित्रता रखकर ही धार्मिक अनुष्ठानों एवम् कार्यों का आयोजन करना चाहिए । आज होली जैसे पवित्र धार्मिक अनुष्ठान में भी पाप व दमित वासना का ही ध्येय रहा है । युगीन परिवर्तन के साथ-साथ धार्मिक मान्यताओं में भी परिवर्तन आ गया है । आज बाहय आडम्बर के कारण धर्म की इमारत डगमगातीहै । लोगों को धर्म पर से विश्वास विचलित होता जा रहा है । इसका एक कारण पुरोहित-पण्डा आदि का बाहयाडम्बर भी है - " गारुडी तीर्थ तालिका के क्रमानुसार कनखल तीर्थ का विशेष महत्त्व है । यहाँ दूर दूर से अस्थिप्रवाह के लिए यात्री आते रहते हैं ।........ एक वार्धक्य-जर्जर सरदार की अश्रुसिक्त आँखें, वेदना-विधुर चेहरा,

1 - "जालक" - शिवानी - पृ॰ 16

जीर्ण-शीर्ण कमीज, पैबंद लगा पेजामा, हाथ में लटके झोले में पुत्र की अस्थियां । बूढे दरिद्र का पहनावा देखकर ही पास खड़े पंडों की गिद्ध दृष्टि ने उसके बटूए की रिक्तता को दूर से ही भांप लिया था । फिर बड़ी अनिच्छा से ही एक पंडा उसकी ओर बढा - "कौन-सा संकल्प करवाओगे, ऊंचा, मध्यम या हल्का ? स्पष्ट था तीनों की फीस वर्गानुसार भिन्न थी । फटे रूमाल की गांठ खोल उसने मुडा-तुडा एक रुपये का नोट और चवन्नी पंडे के हाथ में धर दी, "इतना ही है जी मेरे पास । असंतुष्ट स्वर में पंडा जाने क्या बडबडाया । फिर चटपट द्रुत मंत्रों से झोला भागीरथी की पावन धारा में उलट दिया ।"[1]

वही पंडे सरल भोले अनपढ लोगों को कितना छलते व लूटते हैं इसका एक उदाहरण "किशनुली" से उद्धृत किया गया है । पगली किसना की मृत्यु के पश्चात् काखी ने उसकी क्रिया करवाई । वह कहती है - "गया जाकर मैंने करन के हाथों से उसकी किरिया करवाई । किशनी का बेटा है यह । मां तो यही थी पिता न जाने कौन कसाई था महाराज । मैंने उनके पैर पकड लिए .... पंडाजी बडे भले मानुस थे । बोले कुछ चिंता मत करो यजमानिन थोडा रुपया और लगेगा थोडी देर के लिए मैं ही इसके पिता का पाप ओढ इसे पिंड

1 - "वातायन" - शिवानी- पृ• 74

दिलवा दूँगा ।..... मैंने अपनी बारह तोले की सतलड़ उनके पैरों पर रख दी - क्रिया कर्म करवा दिया और बोले - परम संतुष्ट हो सीधे स्वर्ग को चली गई है इसकी माँ की प्रेतात्मा ।"[1]

पुरोहित - पण्डों के साथ - ~~साथ साधु~~ व जोगियों का पाखण्ड भी यहाँ ज्ञात है । "चौदह फेरे" उपन्यास के अंतर्गत यह भी उद्धृत किया गया है कि साधु के स्वांग में वे महापापी और महा अपराधी हैं । "बच्चा, परमानन्द एक भी गोली तूने साग में धर दी होती तो शिकार न छिटकता - वैसे तो साली दूसरी छोकरी ही तमंचा थी, यहीं से एक पहाड़ी छोकरी को ले जाकर मैंने हैदराबाद में सात हजार में बेचा था । .... पर बच्चा आज उन दो-दो परियों ने हमारी तबीयत बिगाड़ दी - एक भी मिल जाती तो ,.... फिर बाबा की अवाच्य भद्दी कल्पना जंगली हिरनी-सी कुलाँचे लेती मुखर गई । .... हा हा हा हा.... गुरु-शिष्य का अश्लील वार्तालाप उनके भयानक अट्टहास से भी अधिक भयावना था ।"[2]

इस प्रकार वे अपनी वासना को संतृप्त करने का स्वप्न देखते हैं और दूसरी ओर साधु समाज के द्वारा समाचार पत्र में आये फोटो को धरणीधर वसंती व राजूदा को दिखाकर

1 - "किशनुली" - शिवानी - पृ. 39
2 - "चौदह फेरे" - शिवानी - पृ. 130

बडा आडम्बर करते हैं । "भैरवी" के अंतर्गत भी शिवप्रुकुर के महाश्मशान के अघोरी बाबा सन्यासी होते हुए भी माया-टीदी को अपनी भैरवी बनाता है जब साँप के डँसने से वह मर जाती है तो नयी सुन्दरी चन्दन पर उसकी नियत बिगडती है और वह भाग न जाये इसलिये माया की देह को धारा में प्रवाहित करने जाते हैं तब बाहर से कुंडी लगाकर जाते हैं ।"[1]

वैसा ही बाहरी आडम्बर या खोखलापन "मायापुरी" के पीले बाबा का भी स्पष्ट होता है । मन्त्री तिवारीजी के यहाँ पीलेबाबा सत्संग के लिये आते हैं और राधे-राधे कह कर लीन हो जाते हैं । एक बार राधे-राधे कह कर नाचते गाते बद्रीलाल साह की चौथे विवाह की पत्नी कृष्णा को राधा बनाई ...... कृष्णा के पति के वैभव का सूर्य अस्त था । एकाएक खोई समृद्धि पाई । पति की कई मोटरें घूमने लगीं, तेल की मिल शुरू हुई और साठ वर्ष की आयु में पुत्र रत्न प्राप्त हुआ । आज शोभा की सुन्दरता को देखकर राधे राधे कह कर उसे पकड़ ली ।...... पर कृष्णा ने बच्चे को रोते छोड़ बाहर निकल कर अपनी खीझ व्यक्त की ।"[2]

धर्म के नाम पर बाहरी दिखावा रखते हैं पर खोखलापन ज्ञात होता ही है । "झरोखा" का एक अन्य उदाहरण इसे अधिक स्पष्ट करता है । " एक दिन माँ के भेजे फल उन दिव्य चरणों

1 - "भैरवी" - शिवानी - पृ॰ 125
2 - "मायापुरी" - शिवानी- पृ॰ 59

में अर्पित.. करने गईं तो उसे उनकी एक व सर्वथा नवीन दैवी शक्ति का अनुभव हुआ । गहन एकांत में बाबा ने लपक उसकी कलाई जकड़ ली । पुरुष की देह-लोलुप दृष्टि को पहचानने में नारी कभी भूल नहीं करती, चाहे वह बालिका ही क्यों न हो ।" [1]

वैसे ही समाज में निरामिषभोजी बनने का आडम्बर रच कर लुक-छूप कर भाँति-भाँति के तामसी आमिष भोजन पर टूट पड़ने वाले व्यक्ति भी कई होते हैं ।

तथोकथित तथ्यों पर से हम कह सकते हैं कि वर्तमान में मनुष्य जितना शिक्षित होता गया उतना ही खोखला बनता गया है । हमारी प्राचीन संस्कृति, धार्मिक परम्पराएं आदि को वह भूलता चला गया है । किन्तु साथ साथ यह भी स्पष्ट है कि उन धार्मिक अंचल के तले धर्म की वास्तविक भावना नहीं होती है केवल बाह्य आडम्बर ही छिपा हुआ होता है और होता है केवल दंभ तथा खोखलापन ।

§ग§ <u>राजनैतिक परिवेश</u> :- शिवानी के साहित्य में तत्कालिन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवम् राजनीतिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण अभीष्ट है । उनके साहित्य में स्वतंत्रता पूर्व एवम् पश्चात् की राजनीतिक गतिविधियों

1 - "झरोखा" - शिवानी - पृ. 64

का प्रतिबिम्बन किया गया है जिससे देश का सम्पूर्ण वातावरण सामने आ जाता है । उनके साहित्य के अध्ययन से यह ज्ञात हो जाता है कि उन्होंने किसी भी प्रकार के राजनीतिक दलीय- सिद्धान्तों व पूर्वाग्रहों को अपने साहित्य का प्रमुख लक्ष्य नहीं बनाया है, अपितु राजनीतिक घटनाओं को और समस्याओं को अपनी अनुभूति के स्तर पर रखकर पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है । उनकी पैनी दृष्टि इस से भी अछूती नहीं है क्योंकि वे बचपन में राजघरानों में पली थी । जसदन के राजकुमार शिवानीजी के पिताजी के छात्र थे । माणावदर, रामपुर, जूनागढ, मैसूर, जसदन, ओरछा, दतिया आदि के अनेक राजकुमार उनके छात्र थे । पहले वे माणावदर के नवाब के यहां उच्च पद पर नियुक्त हुए तत्पश्चात् रामपुर के गृहमन्त्री के पद पर और ओरछा के दीवान के पद पर रहे ।"[1] अत: पूर्व स्वतंत्रता की राजनीतिक परिस्थितियों से वे अनभिज्ञ नहीं हैं । "चौदह फेरे" के अन्तर्गत भी उज साहब के कमिश्नर मित्र ने शिवदत्त को उनके मित्र विल्सन के यहां चिट्ठि लिखकर भेजा । उन दिनों किसी उच्च पदस्थ अंग्रेज अफसर की चिट्ठी सोने की चिड़िया होती थी ।"[2]

"चलोगी चन्द्रिका", "श्मशान चम्पा", "अतिथि", "पुष्पहार", "करिए छिमा", सुरंगमा" आदि उपन्यासों में मैत्रियों के चरित्र

1 - "चौदह फेरे" - शिवानी - पृ॰ 6
2 - "वही" - शिवानी - पृ॰ 4

चित्रित किये हैं तथा तत्कालिन राजनीतिक परिस्थितियों को भी प्रस्तुत किया है । आज़ादी के पूर्व की परिस्थिती एवम् विश्वयुद्ध के समय का भी चित्रण "वातायन", "झरोखा" आदि रचनाओं में संगृहित है । गोरों द्वारा हिन्दुस्तानी औरतों की छेड़छाड़ व आतंक भी था जिससे प्रजा भयभीत थी । [1] स्वतंत्रता के पश्चात् हमारा मैंत्री मंडल महात्मा गांधी के सूचित सत्य व अहिंसा के मार्ग पर चलता रहा अपितु धीरे-धीरे राजनीति में भी विषचक्र चलता गया । "अतिथि" उपन्यास के अंतर्गत माधव बाबू का चरित्र उसी प्रकार है । अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले माधवबाबू यदि दुःखी थे तो सिर्फ पारिवारिक जीवन से ही । पुत्र तथा पुत्री दोनों उद्दण्ड थे । सिगारेट शराब, अफीम, व नशे की गोलियों के आदि थे । यहाँ तक की पुलीस की डर के कारण पुत्री लीना अफीम व गांजा अपने बगीचे में छूपाकर बिक्री करवाती थी ।" [2] माधवबाबू को राजनीति से वितृष्णा हो गई थी । उनके लिए नवीन रणनीति में कोई स्थान नहीं था । चेष्टा करने पर भी वे अपनी गांधीवादी विचारधारा को बदल नहीं पा रहे थे ..... यह कैसी अराजकता फैल गई थी पूरे देश में । वर्ग - वर्ग की शक्ति को, श्रेणी श्रेणी की शक्ति को विनिष्ट करने में संलग्न थी, मनुष्य का जीवन टके के मोल बिक रहा था, नैतिकता श्रीहीन होकर

1 - "वातायन" - शिवानी" पृ. 11..
2 - "अतिथि" - शिवानी - पृ. 177

दर दर भीख माँगने लगी थी, बस बंद, बाज़ार बंद, रेल बंद, पथ बंद ।"[1] "पुष्पहार" के भीरत भी ऐसे ही निष्काम मैत्री का उल्लेख है । आज राजनीति आदर्शहीन व खोखली बन गई है । "विरोधी पर विजय पाने के लिए अब अहिंसा का आयुध नहीं चल सकता था । राजनीति हिंसा पर आधारित होती चली जा रही थी ।"[2] यह बात आज माधवबाबू समझ रहे हैं । इसके द्वारा लेखिका ने वर्तमान भारत का राजनीतिक यथार्थता की और अंगुली निर्देश किया है ।

देश में आज सर्वत्र जनजीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भी अभियोग की गुनगुनाहट प्रतिक्षण बड़े दु:साहस से प्रखर होती जा रही है । न हमारे जीवन में आदर्शों का कोई मूल्य रह गया है न किसी आचार संहिता का महत्व । जनता और शासक वर्ग के बीच की खाई गंभीर होती चली जा रही है । कानून और व्यवस्था की स्थिति इतनी बिगड चुकी है कि गुरूतर अपराधों को भी हम अब गुरूत्तर अपराध नहीं मानते । अनुशासन से ही शासन की जड़ें जमती हैं । मुट्ठीभर अफसरों को शतरंज के मोहरों की भाँति इधर-उधर खिसकाकर ही अनुशासन नहीं जमता ।

"मानव जीवन में असमानता ही एक ऐसा सूत्र है जो उसे एक-न-एक दिन विद्रोही बना देता है । अपने पास

1 - "अतिथि" - शिवानी - पृ. 196
2 - "वही" - शिवानी - पृ. 241

जीवन-यापन की सामान्य आवश्यकताओं का अभाव और किसी को तर्जनी उठाते ही प्रत्येक सुविधा करतलगत ।... जिनके पास आज शासन की सत्ता है, जिन्हें उसने स्वयं लाखों की भीड में चयन कर, जयमाला पहना, राजदण्ड तथा हिरण्यमय आसन पर प्रतिष्ठित किया, आज वे ही अपने उन्हीं उपासकों को अवज्ञापूर्ण अवहेलना से भूलकर स्वयं आगे बढ गये हैं ।"[1] अपनी जनता जनार्दन को बतलाने के लिये किसी भी समारोह में या उत्सव में अपना खोखला भाषण देकर अपनी एक-एक क्षण कितना अमूल्य है उसका एहसास देने अपने दरबारियों के साथ उठकर जान बूझकर चले जाते हैं ।

"श्मशान चम्पा" उपन्यास के अंतर्गत भी सरकारी अफसरों का भ्रष्टाचार ज्ञात होता है । जो सरकारी गाडियों का दुरुपयोग करते हैं, अपनी भव्य कोठी के निर्माण हेतु ट्रक भर-भर कर सीमेंट मंगवाते हैं तथा कितने ही अक्षम्य अपराध करते हैं ।........ लगता है भ्रष्टाचार किसी महामारी की ही भाँति पूरे प्रदेश को अपने मुँह में ले चूका है ।"[2] इस प्रकार "वातायन" के अंतर्गत भी शिवानी अपने विचार प्रस्तुत किये हैं कि "आज राजनीति अपनी वह गरिमा खो बैठी है । यदि हम इमानदारी से वास्तविकता को स्वीकारें तो आज मनुष्य की किसी भी

1-"जालक" -शिवानी - पृ. 41
2 -"श्मशान चम्पा" - शिवानी - पृ. 7

राजनीतिक दल पर अटूट आस्था नहीं रह गयी है । ईर्ष्या, विद्वेष, एवं स्वार्थ परता जनित दुर्नीति परायणता से आज कौनसा राजनीतिक दल मुक्त है ?"

तथोक्त सभी प्रकार की पुष्टि "सुरंगमा" उपन्यास के अंतर्गत अधिक स्पष्ट होती है । "सुरंगमा" का नायक दीनकर मंत्री बनकर कितने अधम कार्य करता है । दीनकर विनिता को धोखा देकर अपनी पुत्री की टयूटर सुरंगमा से गुलछरिया उडाता था, अनैतिक संबंध स्थापित किया था इतना ही नहीं किंतु उनकी प्रथम पत्नी परु के जीवन में भी काँटे बिछाने शुरु किये और उसकी नौकरी में भी तबदीली कर अनेक परेशानियाँ पहुँचाई । इससे भी संतुष्ट न होकर अपनी शान की खातिर उसने पत्नी परु की कत्ल भी करवायी ।" [1] इस तरह इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारे सामाजिक एवम् राजनैतिक परिवेश की डगमगाती दिवारें आज भी रह-रहकर हमें स्वयं भयभीत कर उठती है । दुर्नीति आज हमारे देश में सर्वाधिक आलोचित व्याधि है, कोई भी प्रदेश आज इसके आतंक से मुक्त नहीं हैं ।

इसके अतिरिक्त शिवानीजी ने वर्तमान जनता सरकार के समय की राजनीतिक परिस्थिती का वर्णन भी "जालक" के अंतर्गत अवगत कराया है । "प्रदर्शन", हडतालों ने जहाँ

1 - "सुरंगमा" - शिवानी - पृ. 205

एक ओर सामान्य जन-जीवन त्रस्त कर दिया है, वहीं पर सत्तारूढ जनता सरकार का स्वार्थ परता का मोतिया बिंद उसके विवेक - चक्षुओं को लगभग दृष्टिहीन बना चुका है। दिन-प्रतिदिन अपनी कार्य क्षमता, अपनी कर्मठता, अपनी शक्ति और सर्वोपरि जनता का विश्वास खो रही है, दूसरी ओर उसकी भोगजन्य विलासी वृत्ति दानवी गति से बढ रही है।"[1] वर्तमान राजनीतिक पटाक्षेप के भीतर महंगाई तो है ही किंतु हमें लगता है शासन का राजदण्ड स्वयं ही शिथिल हो गया है। "ट्रैफिक को ही लीजिए, लाल बत्ती का वह भय अब नहीं रहा। सडक पार करने वाले स्कूटर चालक, रिक्शा चालक या कार-ट्रक चालक हों, अधिकांश ही बत्ती के आदेश की अवहेलना कर तेजी से सडक पार कर जाते हैं।" [2]

विविध एवं विरोध विचारधाराओं के विभिन्न नेताओं का नवीन शासन-तंत्र तब ही कसौटी में खरा उतरेगा जब वे अपनी महत्वाकांक्षाओं को ताक पर धर, स्वयं वीतराग बन, केवल जनता के हित को ही सर्वाधिक महत्त्व दें।

"झरोखा" के अंतर्गत शिवानीजी ने लिखा है कि "हमारे पुराणों के अनुसार राजा का मुख्य कर्तव्य है, अराजकता रूपी विष को दूर करना। इस कठिन कर्तव्य-भार को

1 - "जालक" - शिवानी - पृ. 65
2 - "दरीचा" - शिवानी- पृ. 14

निभाने के लिए ढुलमुल नीति कभी कारगर नहीं हो सकती ।" ।

तथोक्त वर्णन के आधार पर हमें ज्ञात होता है कि शिवानीजी अपने युग की सभी विधाओं एवम् सभी क्षेत्रों से अनभिज्ञ नहीं थी, इनके साहित्य में राजनीतिक परिवेशों का भी सघन उल्लेख मिलता है ।

(ग) "आर्थिक परिवेश :- दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई जनसंख्या, महानगरों का विकास, प्राकृतिक प्रकोपों, औद्योगिक विकास आदि का बहुत व्यापक प्रभाव जन समाज के आर्थिक स्तर पर पड़ा है । आज बेकारी, भुख-मरी, संग्रहखोरी, आर्थिक अनीतियाँ एवं शोषण आदि इसी का ही परिणाम है । आज सामाजिक व्यवस्था को बदलने में अर्थ ही कारण भूत है। ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था भी इन्हीं के कारण टूट चुकी है तथा इसी आर्थिक विष-मता के कारण वर्ग-चेतना, वर्ग-संघर्ष आदि की भावना प्रतिफलित हुई है । शिवानीजी ने लिखा है "अर्थनैतिक संकट से त्रस्त मानव आज नाना कुंठाओं से जकड़ा स्वयं मानवता के ही संहार में जुट गया है । फलत: लूटमार, नृशंस हत्याएँ, तोड़फोड़ और उदर निमित्त बहुकृतवेश" कोई पहुँचा सिद्ध बनकर, विदेश में भारतीय दर्शन की व्याख्या करने निकल पड़ता है । कोई तांत्रिक बनता है,

1 - "झरोखा " -शिवानी" - पृ. 70

UNIVERSITY LIBRARY

कोई भृगुसंहिता खोल भयत्रस्त मानव को उसके उज्ज्वल भविष्य के सपने दिखा अपनी जेब गरम करता है । मनुष्य की अस्वाभाविक गतिविधि का कारण है उसके वातावरण में घुलमिल गयी अनिश्चितता और असुरक्षा जिस समाज में छीना-झपटी, क्षुद्रता व्याप्त हो वहाँ स्वयं ही मानव का अमानवीकरण हो जाता है । जब तक प्रत्येक व्यक्ति को जीवन की समान सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होंगी, तब तक उसमें सहानुभूति और मैत्री की भावना आ भी नहीं सकती ।" [1]

आर्थिक स्थिति - स्थान : हिन्दुस्तान की आर्थिक स्थिति विभिन्न वर्ग से ज्ञात होती है, निम्न-मध्य-वर्ग । शिवानी के उपन्यास व कहानिओं में सभी वर्गों का उल्लेख मिलता है । "दरीचा", "वातायन", "जालक" आदि संस्मरणों-रेखाचित्रों के अंतर्गत भी उन्होंने अपने देश की सभी प्रकार की परिस्थितियों का वर्णन किया है । "अर्थ" के बिना आज जीवन जीना मुश्किल है । आर्थिक दृष्टि से पूंजीपतियों, महाजनों तथा मध्यमवर्ग व निम्नवर्ग का चित्रण चित्रित है । पूंजीपतियों द्वारा दलित-या निम्न वर्गों का शोषण होता रहता है । महाजन तीगुना-चौगुना सूद लेकर दलितों को चूसता रहता है । "दरीचा" के अंतर्गत इसी बात को प्रस्तुत किया गया है । लेखिका की

1 - "वातायन" - शिवानी - पृ० 50

पुरानी जमादारनी सभी आभूषण महाजन की तिजोरी में गिरवी रखती है सभी समय की परिधि के कारण चले गए सिर्फ पाजब जो 30 रूपये में रख थे वही 20 रूपय सूद के साथ छुड़ाने के लिये बिनती करती है । [1] हमारे शास्त्रों ने भी कहा है सूद लेन से बड़ा कोई पाप हो ही नहीं सकता । इसे मदिरा - विक्रय की ही भाँति निकृष्टतम वृत्तियों में से एक माना गया है । फिर भी आर्थिक विडम्बनाएँ मनुष्य को क्या करने को विवश नहीं कर सकती ? "तब जमदाड नदी के पार से जगदम्बा ग्वाला दूध देने लोखिका के यहाँ आता था उसकी पत्नी थी "नौनी" ।...... बहुत पहले जब नौनी गाना होकर आयी थी तो घोर आर्थिक विपत्ति के कठिन क्षणों में स्वयं उसके ससुर ने एक एक कर उसके गहने खोल गिरवी रख दिए । जब कुछ नहीं बचा तो बेचारी नौनी को भी आभूषणों के साथ-साथ जमीनदार महाजन के घर गिरवी रख दी, वह भी जीवन भर के लिए । किन्तु....... उसकी नरमदीली थी जो सदा सदा के लिए हवेली में रखैल बनाकर नहीं रखा था । जब उसका (सरकार का) मन होता था तो बुला लेता था ।" [2] स्वतंत्र भारतीय परिवारों की ऐसी आर्थिक विषमताएँ गाँवों में अक्सर देखने मिलती है। उदरपूर्ति के लिये आय की जरूरत है, और विषम महँगाई के कारण परिस्थिति बहुत विषद, व दुःखद हो जाती है ।

1 - "दरीचा" - शिवानी - पृ. 45
2 - "वही" - शिवानी - पृ. 48

"केंजा" लघु उपन्यास के अंतर्गत मालदारिन उन्मादिनी छोटी लड़की को दाड़िम के पेड के साथ डोरी से बांध कर उसे अकेली छोड़कर खेत मजूरी के लिये जाती थी यह आर्थिक संतृप्तता के लिये आवश्यक ही था । "विश्नुली" के अंतर्गत शास्त्री गांव में धार्मिक क्रिया-कांड, पूजा-पाठ करके आमदनी जुटाते थे साथ-साथ संस्कृत के प्रखर पंडित होने से संस्कृत सीखाने का भी काम करते थे । "केंजा" के अंतर्गत भी उसका ही उल्लेख किया गया है । नन्दी" के पिता धार्मिक क्रिया-काण्ड व पूजा-पाठ ही करते थे । वे एक अच्छे ज्योतिषि भी थे । नंदी भी डोक्टरनी बनकर सूरेश की अवैध संतान को पालने के लिये नौकर करती है । इस प्रकार "सुरंगमा" उपन्यास में सुरंगमा कार्बेक में नौकरी व शाम को टयूशन करना, "मायापुरी" में शोभा का रानीबा के यहां सेक्रेटरी होना आर्थिक आवश्यकता के कारण ही है ।

"श्मशान चम्पा" में चम्पा के पिताजी को सरकारी नौकरी से इल्जाम लगाकर सस्पेन्ड कर दिया गया था, बहन जूही ने मुस्लिम युवक को भाई बनाकर फिर उसके साथ आंतरजातीय विवाह कर लिया था, मां रुग्ण थी इस कारण आर्थिक जिम्मेदारी उस पर ही निर्भर थी इसी से डाक्टरनी बनकर बहुत दूर सीमांत के गांव में नौकरी करने जाना पडा । "कितनी कटुता, कितनी वेदना, कितना अपमान सहकर ही धरणीधर ने इस लोक से विदा

ली थी, इसी से उनकी अशान्त पीड़ित आत्मा रह रहकर चम्पा के चारों ओर मँडराती रही थी ।"[1] इस प्रकार की परिस्थितीवश ही "चल खुसरो घर आपने" के अंतर्गत कुमुद को नौकरी करने का फर्ज बन पड़ता है । कुमुद भी गाँव छोड़कर शहर के एक विज्ञापन के द्वारा चल पड़ती है । जहाँ वह पहले नौकरी करती थी "उस कौलेज से उसको मिलते थे तुल पाँच सौ, उसमें से भी कुछ आने-जाने में निकल जाते, कुछ उमा-लालू की फीस में, दो ट्यूशनों से लगभग तीन सौ और कमा लेती थी, तीन सौ बाबूजी की पेंशन के मिलते थे । बड़े कष्ट से ही वह गृहस्थी की गाड़ी खींच रही थी, इसी से बारह सौ के वेतन का चुग्गा उसे अज्ञात कस्बे में इतनी दूर खींच लाया ।"[2]

तथोक्त आर्थिक चेतना के परिवेश में कई अन्य उपन्यास व कहानियाँ चित्रित हैं, चाहे पारिवारिक जीवन में संवारा हो किंतु इस अभिव्यंजना को व्यक्त किया है "कृष्ण-कली" के अंतर्गत कली अज्ञात कोढ़ी माता पिता की खोज में अनेक परिवेशों में घूमती है वह इसी चेतना के लिये जघन्य अपराध करती है, चरस, अफीम, विलायती घड़ियाँ आदि कई चीजों की . हेरा फेरी करती है । "रथ्या" की वसंती बहुत दूर जाकर देह-व्यापार करती है । "सुरंगमा" का गजानंद संगीत मास्टर बदनाम कोठे पर ट्यूशन देता था ततपश्चात् राजा प्रबोध रंजन के यहाँ उनकी लड़की राजलक्ष्मी को संगीत

1 - "श्मशान चम्पा" - शिवानी - पृ॰ 19
2 - "चल खुसरो घर आपने - शिवनी - पृ॰ 8

शिक्षा देता है किंतु राजलक्ष्मी को भगाकर ले जाने के बाद अनजान परिवेश में कथा-पूजा-पाठ का काम भी करना पडा ।

समाज पर अपना साम्राज्य स्थापित करने वाला अर्थ के बिना गरीब-श्रमिक आदि निम्न वर्ग किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करते हैं इसका उदाहरण भी "वातायन" में प्रस्तुत है । महगाई में भी पराजित नहीं होने वाली अपढ दरिद्र महरी का प्रमाण मिलता है । कहती है "का करी बहूजी, दालन में तो ससुरी आग लगी है, मटर-चना की दाल भी हुई गई है दुई अर्स्सी । मुला सब्जी को कउन पूछे । कढाई क में बूंद-भर तेल उसी में पिसा लहसून-प्याज, ढेर सारे मिर्च, तनी-सा खसखस भूंज-भांज पानी छोड दिया । बस बन गया गरीबी का शोरबा, न सब्जी न दाल, केवल सुगंध का व्यर्थ आश्वासन ।" [1]

इसी प्रकार कुमाउ का बोझा ढोने वाला श्रमिक कुली दोयाल नदी के पत्थरों को कढाई में मनोयोग से मसाले के साथ भून कर टिक्कड (रोटी) के साथ खाते हैं ।"[2] और सिर्फ एक कथरी ओढ कर अपना रक्षण करते हैं ।" सरकार की केवल मनोहारी घोषणाएँ या लुभावने आश्वासन ही अब नहीं लुभा सकते ।" अर्थशास्त्र में एक स्थान पर उल्लिखित है कि प्रजा की प्रसन्नता में ही राजा की प्रसन्नता निहित है । अतः जो प्रजा को सुन्दर लगे वही उचित मानना चाहिए । वर्तमान

1 - "वातायन" - शिवानी - पृ॰ 77
2 - "वातायन" - शिवानी - पृ॰ 110

स्थिति में प्रजा का एक ही उत्तर होगा, आर्थिक सम्पन्नता और सुरक्षा । इधर एक दिन भी ऐसा नहीं जाता, जब समाचार पत्र खोलते ही शहर में दिन-दहाडे हुई एकाध निर्मम हत्या का छूरे की नोंक पर लूट जाने का समाचार न हो ।"[1]

आज की इस आर्थिक विषमता के लिये शिवानीजी ने व्यंग करते हुए कहा है कि "भर्तृहरि ने भी "नीतिशतक" में कहा है कि मनस्वी पुरुष विपन्नावस्था में शाकाहार से ही संतोष करते हैं - "क्वचिच्छकारी"; किन्तु हमारे लिए तो अब वह शाकाहार भी असम्भव हो उठा है । कहा जाता है कि उर्वशी ने कभी केवल घी खाने की प्रतिज्ञा की थी -"घृत मात्र व ममाहार" । हमारी बेचारी उर्वशी तो अब सरसों के तेल खाने की भी प्रतिज्ञा नहीं कर सकती ।"[2]

"सोचा, क्यों न मैं यही पेशा अपना लूं ? मैं प्रौढा थी, किन्तु सुन्दरी रूपसियों को अपने छलनामय संरक्षण में रखकर समृद्ध बन सकती थी । जो लडकियां अब तक मुझे ठग रही थीं उन्हें मैंने * ठग लिया, साफ साफ कह दिया कि उन्हें यदि मेरे होस्टेल में रहना होगा तो मुझे कमीशन भी अनिवार्य रूप से मिलना चाहिए, नहीं तो मैं उन्हें ब्लैक मेल कर दूंगी ।"[3] उक्त अधम पेशा अपनाने वाली मल्लिका भी आर्थिक-आय इस पेशे से करके बाह्य आडम्बर (होस्टेल का) अपनाती थी ।

1 - "दरीचा" - शिवानी - पृ. 56
2 - "वही" - शिवानी - पृ. 19
3 - "चौदह फेरे-शिवानी - पृ. 251

§घ§ साहित्यिक परिवेश :-

शिवानीजी ने अपने युग के अंतर्गत जो साहित्यिक चेतना व्याप्त थी इसका भी अंकन अपने साहित्य में किया । साहित्य के लिये चाहिए शिक्षित समाज । शिवानी ने गाँवों में अत्यंत गरीबी के बावजूद भी पढते हुए समाज का चित्रण किया है । उस जमाने में कैसी शिक्षा दी जाती थी, कैसा अनुशासन था तथा कैसे छात्र विद्या प्राप्ति हेतु पाठशाला जाते थे यह द्रष्टव्य है । "चलोगी चन्द्रिका" के अंतर्गत "बालक चन्द्र-वल्लभ कोट की फटी बाहों से नाक पोंछने वाला था ।और कोट भी कैसा । पिता के कैशोर्य का कोट, जिसे पहन कर वह स्कूल जाता तो जोशी मास्टर व्यंग्य से कहता, "अरे चनरुआ दो भाई दो कोट पहन के क्यों आते हो ? एक ही में तो दोनों समा जाओगे ।" कल से दोनो भाई एक ही कोट पहन कर आना । और पूरी हृदयहीन कक्षा जोशी मास्टर के अद्भुत व्यंग्य से उल्लसित हो हंस उठती ।"[1] इस जमाने में सर पर टोपी आवश्यक थी । अनुशासन का पालन न करने पर कडी सजा होती थी । "नंगे सर जाऊँगा तो जोशी मास्टर मारेगा आमा, चन्द्रवल्लभ के एक धृष्ट सहपाठी ने बिना टोपी के ही स्कूल जाने की धृष्टता की और मोटे रूलर की तडातड मार से अभागे की पीठ ही तोड कर रख दी थी जोशी मास्टर ने ।"[2] इस प्रकार "मायापुरी" के अंतर्गत भी शोभा के भाईयों की टोपी

1 - "चलेगी चन्द्रिका" - शिवानी - पृ. 76
2 - "वही" - शिवानी - पृ. 77

पहनकर जाने की बात स्पष्ट हुई है । वे भी बिना टोपी मास्टर के मार से डरते हैं ।

शिक्षा प्रणाली में अनुशासन अति महत्वपूर्ण है । आज के जमाने में यदि कोई शरारती लडके को भी कक्षा - बाहर निकाला जाय तो शिक्षक की क्या हालत होती है जो हम समज सकते हैं । लेकिन ऐसा क्यों ? इस पर हम आगे देखेंगे ।

नारी शिक्षण :- शिवानीजी ने अपने साहित्य के अंतर्गत इस चेतना को भी अभिव्यंजित किया है । इनकी कहानियों एवम् उपन्यासों में जिन जिन पात्रों का उल्लेख कियाहै वे शिक्षित ही है । शिक्षित होने के कारण बाह्य समाज एवम् वास्तविक जीवन की यथार्थता समझ पाती है । "मायापुरी" उपन्यास के अंतर्गत शोभा की माँ गोदावरी खेत मजदूरी करके तीन बेटे और शोभा का निर्वाह करती है । कितनी कठिनाई से वह सब कुछ करती हुई बेटों को भी पढाती है और इसके अतिरिक्त शोभा को एम॰ए॰ करने के लिये लखनऊ भेजती है । "चलोगी चन्द्रिका" की नायिका चन्द्रिका पति से अलग होकर अपने मायके जाकर पढती है और प्रधानाध्यपिका बनकर स्वतंत्र जीवन जीती है । "विषकन्या" की कामिनी एयर होस्टेस, "गेंडा" की राज होटल रीसेप्टनीस तथा "कैंजा" और "श्मशान चम्पा" की नायिका डौक्टरनी बनती हैं ।

साहित्यिक चेतना :-

शिवानी के साहित्य में इस चेतना को भी पुष्टि मिलती है । कई साहित्यिक सभा-सम्मेलनों, सुविख्यात कवि एवम् साहित्याकारों, कलाकारों, गज़लकारों आदि का उल्लेख उद्धृत हुआ है । जिन साहित्यकारों, कलाकारों एवम् गज़ल कारों से उनका साक्षात्कार हुआ है इसकी जानकारी उनके संस्मरणों एवम् रेखाचित्रों से स्पष्ट होती है । कवि गुमानी कुमाऊ के सुप्रसिद्ध कवि हैं । आज से डेढ सौ वर्ष पहले कुमाऊ के सुप्रसिद्ध कुमाऊं की संस्कृति, समृद्धि ऐतिहासिक देवालयों आदि का विध्वंस अंग्रेजों द्वारा होता था उस वक्त लिखी पंक्तियां हैं -

"विष्णु का देवाल उखाडा
ऊपर बंगला बना खरा
महाराज का महल ढवाया
बेडी खाना तहाँ धरा
मल्ले महल उडायी नंदा
बंगलों से भी तहाँ भरा
अंग्रेजों ने अल्मोडे का
नक्शा और और करा ।"[1]

1 - "दराचा" शिवानी - पृ॰ 25

इस प्रकार अन्य एक हिन्दी साहित्य के सुविख्यात कवि सुमित्रा नंदन पंत जी के साहित्य से अनुभूति करवायी है । किसी दक्ष फोटाग्राफर की तरह है इनकी रचना -

"नारंगी अखरोट, नाक के फूल मंजरी कलियाँ
बढा रही थीं ऋतु शोभा केले की फूली फलियाँ
काफल थे रंग रहे फूल में भी फल लिये खुबानी
लाल बुरुँशों के मधु छत्रों से थीं भरी बनानी ।"[2]

इसके अतिरिक्त बँगला के प्रमुख कवि नजरूल से भी शिवानीजी का साक्षात्कार हुआ था । "इनका एक विशिष्ट गीत उन दिनों आश्रम की वन-वीथिकाओं में गूँजता था -

"आर सहे ना दिल निये ऐई
दिल दरदीर दिल्लगी .... अर्थात् दिल को लेकर दिल दरदी की ये दिल्लगी-अब अच्छी नहीं लगती ।"[3]

इस प्रकार सुविख्यात बेगम अख्तर से भी इनका रिश्ता बेजोड था हर ईद पर शिवानीजी इनसे मिलतीं । "जिस तख्त पर संगीत की महीयसी साम्राज्ञी तनकर बैठी रहती थीं, वह आज भी उसी वायवी कोने में उसी तिरछी भंगिमा में धरा है । वही उटे रंग का मखमली गलीचा और वही चांदनी । विगत ईदों की अनेक स्मृतियाँ मुझे विह्वल कर रहीं हैं यह भाँप कर

1 - "दरीचा" - शिवानी - पृ॰ 25
2 - "वही" - शिवानी - पृ॰ 1
3 - "वही" - शिवानी - पृ॰ 40

अब्बासी साहब बोले - अब हमारी तो यही कता है बेटी, कि - उनके बगैर जिन्दगी गुजारता तो हूँ, लगता है कोई गुनाह किए जा रहा हूँ मैं ।"[1] इस प्रकार अनेक साहित्यकार उनके युग में हो गए थे । सुप्रसिद्ध नृत्यांगना संयुक्ता पाणि-ग्रही सत्यजीत रे, भीमसेन जोशी, गिरिजा देवी, पं॰ ओमकार-नाथ ठाकुर आदि महानुभावों उनके युग के अनमोल रत्न थे ।

वर्तमान शिक्षा पर शिवानी के कुछ विचार-अंश :

हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति का उद्देश्य महान् था । गुरु-शिष्य का पारस्परिक संबंध व्यक्तिगत था । "गुरु शब्द की व्युत्पति के अनुसार गुकार का अर्थ है अंधकार और रुकार का अर्थ है निरोध की क्रिया ; "अंधकार निरोधित्वाद गुरुरित्यभिधीयते ।"[2]

"शिक्षा विदाध्ययन से आरम्भ होती थीं, तर्क, चिंतन एवं मनन इस शिक्षा - प्रणाली के प्रमुख अंग थे । व्याकरण, शिक्षा कला, छंद,, ज्योतिष, गणित, नीति, ब्रहम विद्या, धनुर्विद्या नक्षत्र विद्याआदि अनेक प्रकार की विद्याओं का वर्णन मिलता है । शिक्षा का रुप अत्यन्त व्यापक था, विद्यार्थियों का मानसिक स्तर तीन थे महाप्रज्ञ, मध्यप्रज्ञ एवं अल्पप्रज्ञ । ऐसा वर्गीकरण आधुनिक शिक्षा-प्रणाली में है ही । प्रचीन शिक्षा-प्रणाली

1 - "दरीचा" - शिवानी - पृ॰ 69
2 - "जालक" - शिवानी - पृ॰ 81

थी गुरु-प्रधान, आज की शिक्षा-प्रणाली है शिष्य प्रधान । आज के विद्यार्थी को पठन, चिन्तन या मनन के लिये व्यर्थ का अवकाश नहीं है ।"[1]

"विश्वविद्यालयों में आज व्यापक छात्र अशांति है, श्रमिक असंतोष अपनी चरम पराकाष्टा पर है, महार्घता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, आरक्षण की नीति हमारा अनिष्ट ही अधिक कर रही है । ऐसे समय पर शिक्षा कैसी होनी चाहिए ? "हम शिक्षा के क्षेत्र में नित्य नवीन कुलाचें भरते रहते हैं, गुणी शिक्षाविदों का भी हमारे देश में अभाव नहीं है तब भी क्यों इस घातक व्याधि का अभी तक उन्मूलन नहीं हो पाया है ?"[2]

"राजनीति आज के विद्यार्थी के पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग है । सत्ता की ललक उसे निरन्तर संघर्ष, मारधाड हिंसा की ओर चुंबक-सी खींचती है । दोष विद्यार्थी का नहीं है, दोष है हमारी शिक्षा-प्रणाली का न वह आज विद्यार्थी के सम्मुख सुनिर्दिष्ट लक्ष रख पाती है न कर्मसूची की जीवन्त रूपरेखा । बांग्ला का "एंचूडे पाका" नामक शब्द है, अर्थात् समय से पूर्व ही पक गया फल । आज का विद्यार्थी ऐसा ही "एंचूडे पाका" फल बन गया है ।"[3]

1 - "वातायन" - शिवानी - पृ॰ 127
2 - "दरीचा" - शिवानी - पृ॰ 24
3 - "वातायन" - शिवानी - पृ॰ 128

निष्कर्ष :- शिवानी जी के साहित्य के आद्योपान्त अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट है कि समाज के अंतर्गत बाह्य आडम्बर पारिवारिक कलह एवम् खोखला पर है । समाज व धर्म के नाम पर अपनी स्वार्थपरता सिद्ध करते हैं । समाज के अंतर्गत रही मान्यताएँ, रूढ़ियाँ एवम् प्रणालिकाओं का वर्णन है । नारी की समस्या मूल संवेदना है । भारतीय जीवन के प्रत्येक वर्गों के परिवेशों की अनुभूति व्यक्त करने की गहरी पैठ है । सामाजिक, धार्मिक, नैतिक एवम् शैक्षणिक मूल्यों के विघटन की व्यंजना भी इनके साहित्य पर से अवगत होती है । ग्रामीण व शहरी वातावरण वृत्तियाँ एवम् परिवेशों की धार्मिक, सामाजिक क्रियाओं को बड़े गौर से अनुभूत किया है । समाज सेविका का स्वांग रचकर ट्रेन में लूट करती महिला के द्वारा बाहरी आडम्बर को निर्दिष्ट किया है । इस प्रकार उनका साहित्य पुरानी एवम् नवीन पेढी की अनेक समस्याओं तथा विविधता से भरा हुआ है ।